ISSN 2394-8485

मासिक

गुरमत ज्ञान

३/-

बैसाख-ज्येष्ठ संवत् नानकशाही ५५६ मई 2024 वर्ष १७ अंक ९

सदा विजयी बाबा बंदा सिंघ बहादुर

सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
गुर गिआन अंजनु सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक
गुरमत ज्ञान

बैसाख-ज्येष्ठ संवत् नानकशाही 556
वर्ष 17 अंक 9 मई 2024

संपादक : सतविंदर सिंघ
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ

चंदा

सालाना (देश)	10	रुपये
आजीवन (देश)	100	रुपये
सालाना (विदेश)	250	रुपये
प्रति कापी	3	रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर साहिब -143006
फोन : 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग 303 संपादन विभाग 304
फैक्स : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

ISSN 2394-8485

विषय-सूची

गुरबाणी विचार 4
संपादकीय 5
नानक हुकमु पछाणि कै तउ खसमै मिलणा॥ 7
-डॉ. परमजीत कौर
घनहर बूंद बसुअ रोमावलि कुसम बसंत गनंत न आवै ॥ 11
-डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ
चालीस मुक्तों में से एक शहीद भाई महां सिंघ 16
-डॉ. राजेन्द्र सिंघ साहिल
सिक्ख इतिहास का गौरवशाली दिवस : सरहिंद फतहि दिवस 18
-डॉ. कशमीर सिंघ नूर
छोटा घल्लूघारा 22
-डॉ. तेजिंदरपाल सिंघ
सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया की शख्सियत 27
-डॉ. परमवीर सिंघ
खालसा राज का बहादुर योद्धा : सरदार हरी सिंघ नलूआ 36
- बीबी रजवंत कौर
गुरुद्वारा श्री पाउंटा साहिब का शहीदी साका 43
- स. रणधीर सिंघ संभल
नशा-मुक्ति : सद्गुण-युक्ति 45
-डॉ. मनजीत कौर
खबरनामा 48

गुरबाणी विचार

हरि जेठि जुड़ंदा लोड़ीऐ जिसु अगै सभि निवंनि ॥
हरि सजण दावणि लगिआ किसै न देई बंनि ॥
माणक मोती नामु प्रभ उन लगै नाही संनि ॥
रंग सभे नाराइणै जेते मनि भावंनि ॥
जो हरि लोड़े सो करे सोई जीअ करंनि ॥
जो प्रभि कीते आपणे सेई कहीअहि धंनि ॥
आपण लीआ जे मिलै विछुड़ि किउ रोवंनि ॥
साधू संगु परापते नानक रंग माणंनि ॥
हरि जेठु रंगीला तिसु धणी जिस कै भागु मथंनि ॥४॥ *(पन्ना १३४)*

पंचम पातशाह बारह माहा मांझ की इस पावन पउड़ी में ज्येष्ठ मास के वातावरण और इस मास में की जाने वाली जीव-जगत की क्रियाओं की पृष्ठभूमि में मनुष्य जीवन रूपी वर्ष के इस खंड को प्रभु-नाम के व्यक्तिगत मनन और सामूहिक अथवा संगती विचार द्वारा सफल करने का सुमार्ग बख्शिश करते हैं।

गुरु जी फरमान करते हैं कि ज्येष्ठ मास में परमात्मा अथवा उसके नाम के साथ जुड़ना चाहिए, जिसके समक्ष सभी जीव झुकते हैं अथवा जो सर्वशक्तिमान है। परमात्मा ऐसा मित्र है जिसका दामन थामने से जीव को कोई अन्य त्रास शेष नहीं रहता जकड़ नहीं सकता अर्थात् यम या मृत्यु का भय उसको भयभीत नहीं करता।

गुरु जी कथन करते हैं कि सांसारिक लोग प्राय: हीरे-मोतियों को प्राप्त करना चाहते हैं और प्राप्त करने के पश्चात् फिर वे इस भय से चिंतित रहते हैं कि कहीं इस अमूल्य मोती को कोई चुरा कर न ले जाए। परमात्मा का पावन नाम ही ऐसा विशेष मोती है जिसे कोई चोरी नहीं कर सकता। मनुष्य को नाम की बंदगी करने से सदीवी सुख, आनंद मिलता है। जितने भी रंग हमको अच्छे लगते हैं वे सब परमात्मा के ही रंग हैं। परमात्मा की महान इच्छा ही चारों ओर व्याप्त है। जीव वही करते हैं जो परमात्मा को अच्छा लगता है। जिन जीवों को परमात्मा ने अपना बना लिया है अर्थात् जो जीव उसकी सच्ची स्तुति में लगे हैं उनको शाबाश कहो! मात्र निज प्रयास से (यदि परमात्मा की इच्छा न हो) कुछ भी नहीं होता। यदि ऐसा संभव हो सकता होता तो कोई भी जीव न प्रभु-नाम से बिछड़ता, न ही दुखी होता। सतिगुरु जी फरमान करते हैं कि हे नानक! जिनको साधु अथवा सतिगुरु का साथ मिल जाए वे आनंद-प्रसन्न रहते हैं। जिन मनुष्यों के मस्तक के भाग्य जागृत हो जाते हैं उनको ज्येष्ठ का उष्ण एवं शुष्क मास भी रंग-आनंद से भरपूर लगता है।

संपादकीय

आओ! अपने लासानी इतिहास का विश्व स्तर पर प्रचार करें!

गुरु साहिबान अकाल पुरख की रज़ा के अनुसार इस जगत में से ईर्ष्या, द्वेष, ज़ब्र-जुल्म इत्यादि बदियों का खातिमा कर परोपकार, नेकी, दया, धर्म की सत्ता स्थापित करने के लिए नेकी के रहबर बनकर आए। गुरु साहिबान ने हमेशा ही हक, सच व न्याय के मार्ग को प्राथमिकता दी। निर्बल, निर्धन और निराश्रित लोगों के लिए आश्रय बन कर गुरु साहिबान ने जहां मानसिक तौर पर गुलाम जनमानस का स्तर ऊँचा उठाया, वहीं धार्मिक स्तर पर आ चुकी गिरावट को भी दूर करते हुए गुरबाणी-उच्चारण कर समस्त जनमानस और धार्मिक रहबरों को *''अपना बिगारि बिरांना सांढै ।।''* वाली आदर्श जीवन-युक्ति के अनुसार अपना जीवन ढालने की प्रेरणा की । श्री गुरु नानक साहिब ने बदी के खातिमे के लिए गुरबाणी-उच्चारण किया, धर्म-प्रचार यात्राएं कीं एवं मानवता को बदी का सामना करने हेतु नाम-सिमरन द्वारा बलवान विचारधारा के धारक बनने का उपदेश दिया। बाबर के जुल्म (बदी) के विरुद्ध आवाज़ बुलंद की। उसे जाबिर कह कर संबोधित किया।

इसी विचारधारा को आगे बढ़ाते हुए पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने मानवता की अच्छाई व बुराई, नेकी व बदी, विनम्रता एवं अहंकार, धर्म एवं अधर्म के साथ पहचान करवाई और सम्पूर्ण गुरबाणी को श्री गुरु ग्रंथ साहिब में एकत्र कर समूची मानवता को स्वतंत्र विचार-शक्ति प्रदान की। गुरु जी ने मानवता के सामने गुरमति का नवीनतम सिद्धांत प्रस्तुत किया कि सर्वप्रथम शांतमयी ढंग से बदी का मुकाबला करना चाहिए। इस सिद्धांत को अमल में लाते हुए पंचम पातशाह ने तत्कालीन हुक्मरान जहांगीर द्वारा दिए गए असहनीय कष्ट सहन करते हुए शहादत प्राप्त की। बदी अपनी पराकाष्ठा पर पहुंच कर पराजित हुई।

फिर छठम् पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने जब महसूस किया कि अब बदी को बिना सख्ती किए मात नहीं दी जा सकती, तब आप जी ने शस्त्रधारी होकर बदी के विरुद्ध चार जंगें लड़ीं। दसम पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने इसी विचारधारा को और दृढ़ करते हुए, *''चु कार अज़ हमह हीलते दर गुज़शत ।। हलालस्सत बुरदन ब शमशीर दसत ।।''* का सिद्धांत दृड़

करवाते हुए कहा कि जब बदी के विरुद्ध सभी शांतमयी उपाय विफल हो जाएं तो तेग (कृपाण, शमशेर) उठानी जायज़ है। गुरु साहिबान द्वारा दर्शाए इसी मार्ग पर चलते हुए सिक्खों ने बदी के विरुद्ध शस्त्रबद्ध संघर्ष करते हुए अनेक साकों, घल्लूघारों के लासानी इतिहास की सृजना की। गुरु साहिबान की कृपा से सिक्खों ने अपनी दो फीसदी आबादी के बावजूद अस्सी फीसदी कुर्बानियां देकर देश को आज़ाद करवाया। सबसे ज्यादा काले पानी की सज़ा भी सिक्खों ने ही काटी। शहादतों के प्रसंग में इस बार मई माह में समूचा सिक्ख जगत चालीस मुक्तों का शहीदी दिवस, छोटा घल्लूघारा की याद साका पाउंटा साहिब का दिवस और सरहिंद फ़तहि दिवस मना रहा है।

इस गौरवशाली इतिहास को पढ़-सुन कर अपने पूर्वजों पर फख्र महसूस होता है, जिन्होंने अत्यंत कुर्बानियों से इस लासानी इतिहास को सृजित किया।

आज ज़रूरत है गुरु साहिबान और अपनी कौम के शहीदों द्वारा सृजित लासानी सिक्ख इतिहास का विश्व भर में प्रचार करने की। आज सिक्खों के लासानी इतिहास और शूरवीरों की गाथाओं को इतिहास के पन्नों से ओझल करने की साज़िशें बनाई जा रही हैं। ऐसे समय में पंथ-विरोधी मनसूबों को नाकाम करने के लिए समूचे नानक नाम-लेवा और समूची सिक्ख जत्थेबंदियों का फर्ज़ बनता है कि *''होइ इकत्र मिलहु मेरे भाई दुबिधा दूरि करहु लिव लाइ॥''* वाली आदर्श जीवन-शैली को अपनाते हुए मानवता के सामने आपसी भ्रातृ-भाव तथा पंथक एकता का प्रमाण प्रस्तुत करते हुए अपने विचित्र इतिहास और गुरमति सिद्धांतों को विश्व भर में प्रचारित व प्रसारित करने लिए लामबंद हों। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के नेतृत्व में पंथ-प्रवानित सिक्ख रहित मर्यादा के अनुसार जीवन जीते हुए उच्चतम आचरण के धारक बन कर अपने को गुरबाणी और गुरमति की अमीर परंपरा के साथ जोड़ें, तभी हमारे ये शहीदी पर्व मनाने सफल होंगे और यही हमारे शहीदों को हमारी श्रद्धांजलि होगी।

श्री गुरु अंगद देव जी के प्रकाश-पर्व पर विशेष

नानक हुकमु पछाणि कै तउ खसमै मिलणा।।

*-डॉ. परमजीत कौर**

गुर अंगदु गुर अंग ते सच सबद समेउ।

(भाई गुरदास जी, वार १३:२५)

श्री गुरु अंगद देव जी द्वारा उच्चरित ६३ सलोकों में जीवनोपयोगी उपदेश निहित हैं। आपने अपनी बाणी में शरीर की नश्वरता का चित्रण करते हुए नाम-सिमरन, हुकमि रजाई चलना तथा प्रभु-मिलाप की अनुभूति पर प्रकाश डाला है।

आपने समझाया है कि नाम-सिमरन करने से, इन्द्रियों को वश में करने से प्रभु के गुणों को हृदय में सम्भालने से तथा गुरमति के अनुसार जीवन बनाने से प्रभु-मिलाप का रास्ता आसान हो जाता है।

गुरु जी सचेत कर रहे हैं कि प्रभु के नाम में चित्त न लगे तो जीवन व्यर्थ चला जाता है :

निहफलं तसि जनमसि जावतु ब्रहम न बिंदते।।
सागरं संसारसि गुर परसादी तरहि के।।

(पन्ना १४८)

नाम-सिमरन न करने वाला जीव अंधे मनुष्य के समान पग-पग पर भटकता रहता है। वास्तव में अंधा वह है जिसने प्रभु को विस्मृत कर दिया है :

अंधे सेई नानका खसमहु घुथे जाहि।।

(पन्ना ९५४)

प्रभु का सामीप्य प्राप्त करने के लिए सत्य के मार्ग पर चलना जरूरी है। जीव के पास दो रास्ते हैं-- एक, सत्य का तथा दूसरा, असत्य का। सत्य का मार्ग कल्याण का मार्ग है, आनन्द का मार्ग है, जो नाम को दृढ़ करवाता है, गुरु के साथ जोड़ता है तथा सचिआर प्रभु तक पहुंचाता है। असत्य का मार्ग झूठे पदार्थों के साथ जोड़ता है, मन की चंचलता को बढ़ाता है। ऐसे में मन दुविधाग्रस्त रहता है, भटकता रहता है, जीव परमात्मा से दूर होता जाता है। माया-मोहग्रस्त जीव का मन विकारों के कारण मलिन हुआ रहता है। दुविधाग्रस्त अपवित्र मन से भक्ति नहीं की जा सकती।

श्री गुरु अंगद देव जी समझा रहे हैं कि मन को प्रभु-सिमरन में लगाने के लिए आवश्यक है कि उसके पूर्व स्वभाव को बदला जाए। किसी एक बर्तन में कोई दूसरी वस्तु तभी रखी जा सकती है यदि उसमें पड़ी हुई पहली वस्तु निकाल दी जाए। मन से माया के मोह को निकालकर ही मन को नाम-सिमरन में लगाया जा सकता है :

वसतू अंदरि वसतु समावै दूजी होवै पासि।।
साहिब सेती हुकमु न चलै कही बणै अरदासि।।

(पन्ना ४७४)

मन को पवित्र रखने के लिए ज्ञानेन्द्रियों को वश में करना आवश्यक है। सारी ज्ञानेन्द्रियां अपने-अपने विषयों के रस में रत रहती हैं, अपने

**६२०, गली नं. १, छोटी लाईन, संतपुरा, यमुनानगर (हरियाणा)—१३५००१ फोन : ९८१२३-५८१८६*

शरीर-घर के बारे में सचेत नहीं रहती। काम, क्रोध आदि पांच चोर आत्मिक जीवन की पूंजी चुरा लेते हैं। श्री गुरु अरजन देव जी सचेत कर रहे हैं कि पररूप पर कुदृष्टि रखना, मानों नेत्रों में नींद आई हुई है। लोगों की निंदा सुन-सुन कर कान सोये रहते हैं। जीभ खाने के लोभ में, पदार्थों के स्वाद में सोई रहती है। मन माया के रंग-तमाशों में मस्त होकर सोया रहता है :

नैनहु नीद पर द्रिसटि विकार ।।
स्रवण सोए सुणि निंद वीचार ।।
रसना सोई लोभि मीठै सादि ।।
मनु सोइआ माइआ बिसमादि ।।१ ।।
इसु ग्रिह महि कोई जागतु रहै ।।
साबतु वसतु ओहु अपनी लहै ।। (पन्ना १८२)

इस प्रकार सारी ज्ञानेन्द्रियां निष्फल हो जाती हैं :

मिथिआ स्रवन पर निंदा सुनहि ।।
मिथिआ हसत पर दरब कउ हिरहि ।।
मिथिआ नेत्र पेखत पर त्रिअ रूपाद ।।
मिथिआ रसना भोजन अन स्वाद ।।
मिथिआ चरन पर बिकार कउ धावहि ।।
मिथिआ मन पर लोभ लुभावहि ।।
मिथिआ तन नही परउपकारा ।।
मिथिआ बासु लेत बिकारा ।।
बिनु बूझे मिथिआ सभ भए ।।
सफल देह नानक हरि हरि नाम लए ।।
(पन्ना २६८)

श्री गुरु अंगद देव जी विस्तारपूर्वक समझा रहे हैं कि मानव-स्वभाव है कि वह कभी तृप्त नहीं होता। कान बातें सुन-सुनकर भी अतृप्त रहते हैं। विभिन्न रसों के अधीन हुई ज्ञानेन्द्रियां अपने विषयों से स्वयं को वर्जित नहीं करती। समझाने पर भी भूख शांत नहीं होती। तृष्णा के अधीन हुआ मनुष्य तभी तृप्त हो सकता है जब गुरमति के अनुसार चलता हुआ प्रभु का गुण-कीर्तन करता रहे तथा गुणों के स्वामी प्रभु में लीन रहे :

आखणु आखि न रजिआ सुनणि न रजे कंन ।।
अखी देखि न रजीआ गुण गाहक इक वंन ।।
भुखिआ भुख न उतरै गली भुख न जाइ ।।
नानक भुखा ता रजै जा गुण कहि गुणी समाइ ।।
(पन्ना १४७)

प्रभु-प्रेम से हीन जीव मन के हठ से परमात्मा का सामीप्य प्राप्त नहीं कर सकता। वही मनुष्य परमात्मा की कृपा का पात्र बनता है जो शुभ भावना रखता हुआ गुरु-शब्द की विचार कर उसमें निर्दिष्ट नियमों के अनुसार जीवन बनाता है :

मनहठि तरफ न जिपई जे बहुता घाले ।।
तरफ जिणै सत भाउ दे
जन नानक सबदु वीचारे ।। (पन्ना ७८७)

प्रभु-प्राप्ति की डगर पर चलने के लिए पर-धन, पर-तन का लोभ, पर-निंदा, अहं, मेर-तेर की भावना का त्याग कर जीवित रहते हुए (मैं के अभाव से) मर जाना जरूरी है। संसार में रहते हुए, जीवित होते हुए कैसे मरा जा सकता है, इसको विस्तार से समझाते हुए श्री गुरु अंगद देव जी कथन करते हैं कि यदि नेत्रों के बिना देखें अर्थात् यदि नेत्रों को पर-रूप देखने से रोक लिया जाए, कानों के बिना सुनें अर्थात् यदि कानों को निंदा आदि सुनने की आदत से हटा लिया जाए, यदि पैरों के बिना

चला जाए अर्थात् पैरों को गलत रास्ते पर जाने से रोक लिए जाए, इसी प्रकार यदि हाथों के बिना काम किया जाए अर्थात् हाथों से कोई दुष्कर्म, किसी के नुकसान का काम न किया जाए, तो जीव जीवित रहते हुए भी मर सकता है तथा प्रभु-हुक्म पहचान कर प्रभु के साथ मिल सकता है :

अखी बाझहु वेखणा विणु कंना सुनणा ।।
पैरा बाझहु चलणा विणु हथा करणा ।।
जीभै बाझहु बोलणा इउ जीवत मरणा ।।
नानक हुकमु पछाणि कै तउ खसमै मिलणा ।।

(पन्ना १३९)

जब मनुष्य गुरमति के अनुसार जीवन बिताते हुए आपा-भाव त्याग देता है अर्थात् अहं, मेर-तेर को त्याग देता है तो उसकी ज्ञानेन्द्रियां नियंत्रित रहती हैं, सही मार्ग पर चल पड़ती हैं। वह निर्मल मन से सिमरन करता हुआ प्रभु के निकट जाने का प्रयास करता है। ऐसे में प्रभु से दूरी मिटती जाती है। गुरु साहिब समझाते हैं कि जो जीव-स्त्री 'मैं' की भावना का त्यागकर, मन लगाकर गुरु द्वारा निर्दिष्ट मार्ग पर चलती है उसके अंदर की चंचलता समाप्त हो जाती है, आत्मिक स्थिरता बनी रहती है। वह जीवन में आए हुए दुख-सुख को प्रभु की रजा मान कर हर समय परमात्मा को याद रखती है :

जां सुखु ता सहु राविओ
दुखि भी सम्हालिओइ ।।
नानकु कहै सिआणीए इउ कंत मिलावा होइ ।।

(पन्ना ७९२)

परमात्मा सदा प्रेम तथा कृपा करने वाला है। शिकवा करने के स्थान पर उसकी रज़ा को समझने में ही कल्याण है :

नानक हुकमु न बुझई अंधा कहीऐ सोइ ।।

(पन्ना ९५४)

सेवा सिमरन में सहायक होती है। मन प्रभु को अर्पण करके 'मैं' का त्याग कर की गई सेवा फलदायक होती है :

आपु गवाइ सेवा करे ता किछु पाए मानु ।।
नानक जिस नो लगा तिसु मिलै
लगा सो परवानु ।। (पन्ना ४७४)

मनुष्य मन्द कर्मों से अपने को रोक सके, इसके लिए हृदय में परमात्मा का भय होना आवश्यक है। गुरु जी का कथन है कि यदि जीव प्रभु के भय में चलने को अपने पैर बनाए तथा प्रेम को हाथ बनाए, प्रभु की याद में रहने को नेत्र बनाए, तो प्रभु को पा सकता है :

दिसै सुणीऐ जाणीऐ साउ न पाइआ जाइ ।।
रुहला टुंडा अंधुला किउ गलि लगै धाइ ।।
भै के चरण कर भाव के लोइण सुरति करेइ ।।
नानकु कहै सिआणीए इव कंत मिलावा होइ ।।

(पन्ना १३९)

अपने-अपने कर्मों के अनुसार जीव प्रभु के निकट या उससे दूर होता है। परमात्मा का नाम-सिमरन करने वाले नाम जप-जप कर अपना जीवन सफल कर लेते हैं :

चंगिआईआ बुरिआईआ वाचे धरमु हदूरि ।।
करमी आपो आपणी के नेड़ै के दूरि ।।
जिनी नामु धिआइआ गए मसकति घालि ।।
नानक ते मुख उजले होर केती छुटी नालि ।।

(पन्ना १४६)

परमात्मा को हृदय में बसाने से ही प्रभु-मिलाप संभव हो सकता है, किसी बाहरी (धार्मिक) लिबास, भेख, कर्मकाण्ड आदि से नहीं :

मिलिऐ मिलिआ ना मिलै
मिलै मिलिआ जे होइ ।।
अंतर आतमै जो मिलै मिलिआ कहीऐ सोइ ।।

(पन्ना ७९१)

जो जीव अपनी सांसों की सारी पूंजी नाम के व्यापार में लगा देते हैं उन पर प्रभु की कृपा होती है :

— नदरि तिना कउ नानका
जि साबतु लाए रासि ।। (पन्ना १२३८)
— नदरि तिन्हा कउ नानका नामु जिन्हा नीसाणु ।।

(पन्ना १२३९)

उठते-बैठते, सोते-जागते सदैव परमात्मा को याद रखने वाले सदा प्रसन्न रहते हैं :

नानक तिना बसंतु है जिन्ह घरि वसिआ कंतु ।।

(पन्ना ७९१)

नाम-सिमरन के लिए अमृत बेला को उत्तम माना गया है। श्री गुरु अंगद देव जी के अनुसार अमृत बेला में ऊँची सुरत वाले मनुष्यों के मन में नाम जपने का चाव पैदा होता है। उस समय उनका सम्बंध उन गुरमुखों के साथ बनता है जिनके अंदर नाम का प्रवाह चल रहा होता है तथा उनके मन एवं मुख में सच्चा नाम बसता है। वहां सत्संग में नाम-अमृत बांटा जाता है। प्रभु की कृपा से उनको नाम की दाति मिलती है। अमृत बेला की कमाई से उन पर नाम-रंग चढ़ता है :

चउथै पहरि सबाह कै सुरतिआ उपजै चाउ ।।
तिना दरीआवा सिउ दोसती
मनि मुखि सचा नाउ ।।
ओथै अंम्रितु वंडीऐ करमी होइ पसाउ ।।
कंचन काइआ कसीऐ वंनी चड़ै चड़ाउ ।।

(पन्ना १४६)

अमृत बेला में उठकर नाम-सिमरन करने से मन शांत हो जाता है, स्वभाव में विनम्रता आ जाती है, मन में उत्साह तथा प्रसन्नता बनी रहती है, मन-तन निरोग हो जाते हैं। अमृत बेला में नाम-सिमरन के अभ्यास के बिना अंदर नाम का प्रवाह नहीं चलता। श्री गुरु अंगद देव जी संक्षेप में समझाते हैं कि जिस मनुष्य के हृदय में नाम का निवास हो जाता है वह सांसारिक विषयों से विमुख हो जाता है। परिवार के साथ भी उसका वह मोह नहीं रह जाता जो त्रिगुणात्मक माया में फंसाता है। ऐसा मनुष्य प्रभु को सदैव अपने विचार-मण्डल में टिकाए रखता है। किन्तु ऐसे मनुष्य बहुत कम मिलते हैं, जो हर दम अथाह, अगोचर, अगम्य, अनन्त प्रभु का दीदार करने में लीन रहते हैं :

सेई पूरे साह जिनी पूरा पाइआ ।।
अठी वेपरवाह रहनि इकतै रंगि ।।
दरसनि रूपि अथाह विरले पाईअहि ।।

(पन्ना १४६)

श्री गुरु अमरदास जी के प्रकाश-पर्व पर विशेष

घनहर बूंद बसुअ रोमावलि कुसम बसंत गनंत न आवै ।।

*-डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ**

श्री गुरु अमरदास जी का सिक्ख पंथ-काल श्री गुरु नानक साहिब द्वारा प्रतिपादित धर्म-दर्शन की व्यवहारिक व्याख्या का काल था। श्री गुरु नानक साहिब ने जिस आदर्श सिक्ख की कल्पना की थी वह श्री गुरु अमरदास साहिब में उस समय प्रकट हुआ जब वे श्री गुरु अंगद साहिब की शरण में आये और लगभग बारह वर्ष तक उस कसौटी पर खरे उतरते रहे। श्री गुरु अमरदास जी ने लगभग चौबीस वर्ष गुरुआई पर आसीन रह कर सिक्ख पंथ को दिशा प्रदान की तथा अपनी बाणी और प्रेरणा से अगण्य सिक्खों का उद्धार किया। यह एक लंबी समयावधि थी-- परीक्षा की भी और सिद्धता की भी। इसके लिए अपार संयम और सहज वांछित था, फिर भी तत्कालीन परिस्थितियों में संभव नहीं था। दशम द्वार को खोलने और चतुर्थ पद की अवस्था को प्राप्त करने में श्री गुरु अमरदास जी सफल रहे थे। इस प्राप्ति ने ही उन्हें गुरुआई का अधिकारी बनाया था। यह एक ऐसी साधना थी जिसके लिये बड़े-बड़े साधक, जती, तपी लालायित रहते थे। गुरबाणी में सहज को जीवन की सर्वोत्तम अवस्था बताया गया है जो रजो गुण, तमो गुण और सतो गुण से उबरने के पश्चात ही प्राप्त होती है। रजोगुण, तमोगुण और सतोगुण ये तीनों अवस्थायें कामनाओं की जनक हैं और तृष्णाओं की उत्प्रेरक हैं। इससे मन की भटकन बढ़ती है और एकाग्रता नहीं बनती, जो परमात्मा की भक्ति की प्रथम अनिवार्यता है। श्री गुरु अमरदास जी जब श्री गुरु अंगद साहिब की शरण में आये तो उनके प्रेम में ऐसे भीगे कि सभी तृष्णाओं और कामनाओं से मुक्त हो गये। गुरु साहिब ने स्वयं इसे अपनी बाणी में अंकित किया :

मन मेरे हरि रसु चाखु तिख जाइ ।।
जिनी गुरमुखि चाखिआ सहजे रहे समाइ ।।

(पन्ना २६)

श्री गुरु अमरदास जी की सहज की यात्रा श्री गुरु नानक साहिब के शबद ''करणी कागदु मनु मसवाणी बुरा भला दुइ लेख पए।।'' से आरंभ हुई, जो उन्होंने श्री गुरु अंगद साहिब की सुपुत्री बीबी अमरो जी को एक दिन प्रात: काल गायन करते हुए संयोगवश सुना। बीबी अमरो जी श्री गुरु अमरदास जी के भ्राता की पुत्रवधू थीं। लंबे समय तक आत्म-तत्व की खोज में भटकने वाले स्वभाव से धार्मिक वृत्ति के धारक श्री गुरु अमरदास जी को विस्मयजनक आत्मिक शांति का अनुभव हुआ। मन में उस गुरु के लिये प्रेम के अंकुर उत्पन्न हो गये जिसने ऐसी दिव्यता अपनी बाणी में समाहित कर दी थी। उस समय श्री गुरु अंगद साहिब, श्री गुरु नानक साहिब के उत्तराधिकारी के रूप में गुरुआई पर आसीन थे। श्री गुरु अमरदास जी उनके दर्शन करने खडूर साहिब

**ई-१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ-२२६०१७, फोन : ९४१५९-६०५३३, ८४९७८-५२८९९*

जा पहुंचे। श्री गुरु अंगद साहिब पारिवारिक रिश्ते में उनके समधी लगते थे, जो सम्मान और समानता का संबंध था। श्री गुरु अमरदास जी के मन में गुरु-घर के लिये उपजे प्रेम ने उस संबंध को दृष्टि से सदा के लिये ओझल कर दिया। खडूर साहिब में उन्हें बस, गुरु के दर्शन हुए। श्री गुरु नानक साहिब की बाणी के उस शबद ने श्री गुरु अमरदास जी में एक सिक्ख का सृजन कर दिया था, जिसका पूर्ण समर्पण अपने गुरु के प्रति था। श्री गुरु अंगद साहिब के दर्शन-मात्र से उनकी समस्त तृष्णायें शांत हो गईं और मन गुरु-प्रेम से संतृप्त हो कामना-विहीन हो गया। सरल शब्दों मे ऐसे वर्णित की जाने वाली इस दुर्लभ अवस्था को ही सहज अवस्था (आत्मिक स्थिरता) कहा गया है। रजोगुण, तमोगुण और सतो गुण, इन तीनों अवस्थाओं में अहंकार बना ही रहता है, जो समस्त पाप-कर्मों का मूल है और अन्य विकारों का प्रश्रयदाता है। मन में परमात्मा के लिये प्रेम प्रकट हो जाये तो अहंकार का नाश हो जाता है। तब प्रेम दृढ़ होता है और सहज अवस्था बनती है :

अंतरि हरि रसु रवि रहिआ
चूका मनि अभिमानु ।।
हिरदै कमलु प्रगासिआ लागा सहजि धिआनु ।।

(पन्ना २६)

श्री गुरु अमरदास जी खडूर साहिब आये और श्री गुरु अंगद साहिब के हो गये। पूर्व की सारी प्रतिबद्धतायें एक निर्णय से त्याग दीं। यह आसान कार्य नहीं था। यह उस आत्मिक बल से संभव हुआ जो प्रेम से उत्पन्न हुआ था। आज किसी को भी आश्चर्य होता है कि श्री गुरु अमरदास जी कैसे वृद्धावस्था में भी निरंतर बारह वर्ष तक श्री गुरु अंगद साहिब और गुरु-घर में नित्य आने वाली संगत की कठिनतम सेवा कर सके, जो रात का तीसरा पहर रहते ही आरंभ हो जाती थी और रात्रि लंगर की संपूर्णता तक अनवरत चलती थी। सहज अवस्था कैसे कौतुक करती है, इसका सबसे सुंदर प्रमाण श्री गुरु अमरदास जी का जीवन है। तृष्णाओं, कामनाओं का नाश मनुष्य को निर्लिप्त, निर्विकार तो बनाता ही है, परमात्मा से सीधा संबंध भी स्थापित करता है, जिसका आधार प्रेम होता है। मनुष्य का हर कर्म परमात्मा को समर्पित होता है, क्योंकि वह परमात्मा को स्वामी मान लेता है। यह संबंध स्वामी और दास का हो जाता है। जब दास का प्रत्येक कर्म उसके स्वामी के हित होता है तो दास के प्रत्येक कर्म को स्वामी अपना मान कर उसमें अपना बल प्रकट कर देता है :

जिस ही की सिरकार है
तिस ही का सभु कोइ ।।
गुरमुखि कार कमावणी सचु घटि परगटु होइ ।।

(पन्ना २७)

श्री गुरु अमरदास जी ने सेवक रूप में श्री गुरु अंगद साहिब को स्व अर्पित कर दिया तो श्री गुरु अंगद साहिब ने उनकी हर सेवा, हर भावना को अपना कार्य बना अपना बल उसमें समा दिया था। श्री गुरु अमरदास जी की सेवा में न तो उनकी आयु आड़े आई, न कभी थकान, अरुचि, रोग, व्याधिविघ्न बनी। उनके सभी संकल्प पूरे होते गये। वे श्री गुरु अंगद साहिब की सुविधाओं का तो ध्यान रखते ही थे, उसी प्रेम-भावना से सारी संगत की सेवा भी किया करते थे। सेवा के साथ-

साथ उनका सिमरन भी चलता रहता था। उनकी सेवा और सिमरन में भेद संभव नहीं था। गुरुआई पर आसीन होने के बाद श्री गुरु अमरदास जी की सहज अवस्था का उत्कर्ष प्रकट हुआ। गुरु बनने के पश्चात उन्हें श्री गुरु अंगद साहिब के पुत्र दातू जी का अपमानजनक व्यवहार भी सहन करना पड़ा, किन्तु इसका सामना गुरु साहिब ने विनम्रता से किया और सदैव के लिये एक आदर्श स्थापित कर दिया। सहज को भंग नहीं किया जा सकता, क्योंकि इसमें ईश्वरीय तत्व उपस्थित होता है और गुरु की कृपा विद्यमान होती है। श्री गुरु अमरदास जी ने कहा कि सहज अवस्था तो सभी पाना चाहते हैं :

सहजै नो सभ लोचदी बिनु गुर पाइआ न जाइ ।।
पड़ि पड़ि पंडित जोतकी
थके भेखी भरमि भुलाइ ।।
गुर भेटे सहजु पाइआ
आपणी किरपा करे रजाइ ।। (*पन्ना ६८*)

संसार में अनगिनत लोग आत्मिक तृप्ति चाहते हैं, जिसके लिये वे बड़े-बड़े धार्मिक ग्रन्थों का अध्ययन करते हैं, विभिन्न प्रकार की गणनायें करते हैं, किन्तु उन्हें सफलता नहीं मिलती। विकार और माया का मोह उन्हें भ्रमित करता रहता है। उनके जीवन में दुख बने रहते हैं और परमात्मा से मेल नहीं हो पाता। श्री गुरु अमरदास जी ने कहा कि मन का सहज गुरु की शरण में आये बिना प्राप्त नहीं किया जा सकता। गुरु जब कृपा करता है तभी मनुष्य का उद्धार होता है। गुरु की शरण भी हो और उसकी कृपा भी हो। श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पन्ना ६८ पर सुशोभित शबद में सहज अवस्था के बारे में श्री गुरु अमरदास जी ने निम्न कथन किये :

१. सबदै ही ते सहजु ऊपजै हरि पाइआ सचु सोइ ।। — गुरबाणी ही सहज अवस्था- प्राप्ति हेतु सच्ची मार्गदर्शक है। गुरबाणी ही परमात्मा से मेल का मार्ग है।

२. सहजे गाविआ थाइ पवै बिनु सहजै कथनी बादि ।।—— सहज अवस्था में की गई भक्ति ही सार्थक है अन्यथा वह कर्मकांड ही है।

३. सहजे ही भगति ऊपजै सहजि पिआरि बैरागि ।। —— सहज अवस्था में ही मन में परमात्मा के लिये सच्चा प्रेम उत्पन्न होता है और मन परमात्मा की शरण को व्याकुल होता है।

४. सहजै ही ते सुख साति होइ बिनु सहजै जीवणु बादि ।। —— सहज अवस्था में ही जीवन-सुख है और भटकन से मुक्ति है, अन्यथा जीवन में दुख और संताप व्यग्रता उत्पन्न करते रहते हैं।

५. सहजि सालाही सदा सदा सहजि समाधि लगाइ ।। —— मन सहज अवस्था में आता है तभी श्वास-श्वास सिमरन संभव हो पाता है और चित्त एकाग्र होता है।

६. सहजे ही गुण ऊचरै भगति करे लिव लाइ ।। —— सहज अवस्था में आने पर ही परमात्मा की महानता के दर्शन होने लगते हैं और विश्वास दृढ़ होता है।

७. सबदे ही हरि मनि वसै रसना हरि रसु खाइ ।। —— गुरु के हुक्म का पालन करके ही परमात्मा को मन में बसाने की योग्यता प्राप्त होती है, रसना पर उसका नाम सुशोभित होता है और मन उसकी कृपा से प्रफुल्लित हो उठता है।

८. सहजे कालु विडारिआ सच सरणाई पाइ ।।

—— सहज अवस्था में आने पर परमात्मा की शरण प्राप्त हो जाती है और सहज ही काल के भय से मुक्ति हो जाती है।

९. सहजे हरि नामु मनि वसिआ सची कार कमाइ ।। —— नाम जपने में मन की एकाग्रता बहुत लोगों के लिये चुनौती है। गुरु की आज्ञा में रह कर सहज अवस्था प्राप्त करने वाले गुरसिक्ख के लिये मन की एकाग्रता सहज हो जाती है और वह शुभ कर्मों में रत होता है।

१०. से वडभागी जिनी पाइआ सहजे रहे समाइ ।। —— सहज अवस्था बड़े भाग्य से प्राप्त होती है। वाहिगुरु जब कृपा करता है तो यह अति सुगमता से प्राप्त हो जाती है।

श्री गुरु अमरदास जी ने कहा कि सहज अवस्था नहीं है तो मानव-जीवन में दिशाहीनता है और भ्रम है अर्थात् जीवन निरर्थक है। निराकार परमात्मा का घट-घट में दर्शन तभी किया जा सकता है जब मन रजो, तमो और सतो गुणों से उबर कर सहज में आ जाये। जिसने गुरु से ज्ञान प्राप्त कर लिया वह नाम का मोल जान लेता है और उसे सरलता से सहेजता है,

गिआनीआ का धनु नामु है
सहजि करहि वापारु ।।
अनदिनु लाहा हरि नामु लैनि अखुट भरे भंडार ।।

(पन्ना ६८)

श्री गुरु अमरदास जी गुणों के असीम सागर थे। जीवन के प्रत्येक पक्ष को उन्होंने अपनी निर्मल दृष्टि से समृद्ध किया। सिक्ख धर्म के प्रचार के लिये उन्होंने बाईस मुख्य केंद्र स्थापित किये और प्रमुख सिक्खों को इन केन्द्रों का दायित्व सौंपा, ताकि गुरबाणी के आदर्श अधिकाधिक लोगों तक पहुंच कर उनका जीवन बदल सकें :

जह कह तह भरपूरु सबदु दीपकि दीपायउ ।।
जिह सिखह संग्रहिओ ततु हरि चरण मिलायउ ।।

(पन्ना १३९५)

श्री गुरु अमरदास जी ने संसार में नाम की अनमोल दाति (देन) बांटी। जिसने इस दाति को धारण किया, गुरु साहिब ने उसका उद्धार कर दिया। ऐसा परमात्मा कर सकता है अथवा वो, जिसमें परमात्मा की शक्तियां प्रकट हो जायें। भट्ट साहिबान ने गुरु साहिब की इस महिमा का प्रत्यक्ष दर्शन करने के बाद ही कहा था कि परमात्मा स्वयं श्री गुरु अमरदास जी में अवतरित हो प्रकट हुआ है। प्रचार-केन्द्रों की स्थापना से सिक्ख पंथ को एक सुदृढ़ आधार प्राप्त हुआ और गुरबाणी, सिक्ख धर्म के सिद्धान्त लोगों में जागृति का कारण बने।

सहज, समरसता और समानता का अंतर संबंध है। सहज की अंतर अवस्था को बाह्य विस्तार मिलता है, तभी इसमें स्थिरता आ पाती है। श्री गुरु अमरदास जी ने इस सत्य की पहचान करते हुए उन सामाजिक कुरीतियों पर भी प्रहार किया जो समरसता और समानता को भंग करने वाली थीं। गुरु साहिब ने व्यक्तिगत भ्रम तोड़े :

जाति का गरबु न करि मूरख गवारा ।।
इसु गरब ते चलहि बहुतु विकारा ।।

(पन्ना ११२७)

समाज में भेदभाव और अन्याय का सबसे बड़ा कारण जाति रही है। जाति की उच्चता की अवधारणा ने अन्य जातियों को निम्न मान लिया और (तथाकथित) उच्च जाति के लोगों के

अहंकार को इतना बड़ा कर दिया कि वे (तथाकथित) निम्न जाति के लोगों के साथ पशुवत व्यवहार करने लगे। निम्न मानी जाने वाली जातियों को प्रताड़ित करना और जाति के आधार पर आदर-सम्मान प्राप्त करना जन्मजात अधिकार मान लिया गया। यह बाह्य प्रताड़ना इतनी प्रचंड थी कि प्रताड़ित जातियां अंतर के सहज की अनुभूति ही नहीं कर सकती थीं।

उधर (तथाकथित) उच्च जाति का अहंकार इतना बलवान था कि अंतर सदैव उत्तेजना में रहता था। श्री गुरु अमरदास जी ने इसे मूर्खता कहा, जिससे मन विकारों का बंदी हो जाता है। उन्होंने कहा कि कथित उच्च जाति अथवा कथित निम्न, सभी के जन्म की विधि समान है। यह आधारभूत समानता है। सभी की रचना में समान तत्व अर्थात् जल, पवन, अग्नि, धरती और आकाश का संयोग है, बस, आकार भिन्न है। जैसे कुम्हार एक ही मिट्टी से अलग-अलग आकार के बर्तन बना देता है-- *''बहु बिधि भांडे घड़ै कुम्हारा।।''* गुरु साहिब ने कहा कि जब सभी की रचना पांच तत्वों से हुई है तो ऊंच-नीच का विचार कैसा-- *''पंच ततु मिलि देही का आकारा।। घटि वधि को करै बीचारा।।''* यह मानव-समानता का मूल विचार था जो सहज अवस्था को सुनिश्चित करने का प्रमुख कारक था। श्री गुरु अमरदास जी ने स्त्रियों का सामाजिक स्तर ऊँचा उठा कर पुरुषों के समान लाने के लिये पर्दा-प्रथा, विधवा-विवाह, सती-प्रथा के जो प्रश्न उठाये, उनके मूल में भी समानता का यही विचार विद्यमान था। आपने कहा कि श्रेष्ठता का संबंध गुणों और कर्मों से है-- *''ब्रहमु बिंदे सो ब्राहमणु होई।।''* 'पहले पंगत, पाछै संगत' का नियम बना कर गुरु साहिब ने समानता और परस्पर प्रेम का भाव स्थापित करने की बड़ी पहल की। वे चाहते थे कि सिक्ख जो भावना गुरु के प्रति रखता है उसी भावना से अन्य सिक्खों के साथ व्यवहार करे। यह एक प्रकार से खालसा के सृजन के बीज थे जो गुरु साहिब बो रहे थे। उल्लेखनीय है कि खालसा की साजना के लिये श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने बैसाखी का जो दिन चुना था उस बैसाखी को मनाने की परंपरा श्री गुरु अमरदास जी ने ही आरंभ की थी।

श्री गुरु अमरदास जी की प्रेरणा तो मृत्यु को भी सहज स्वीकार करने की थी-- *''भगतु सतिगुरु पुरखु सोई जिसु हरि प्रभ भाणा भावए।। आनंद अनहद वजहि वाजे हरि आपि गलि मेलावऐ ।।''*

गुरु के बताये मार्ग पर चलना अति कठिन तो है किन्तु मोक्ष का मार्ग यही है *''खंनिअहु तिखी वालहु निकी एतु मारगि जाणा।।''* वाहिगुरु स्वयं ही कृपा करता है और उस मार्ग पर चलाता है-- *''जिव तू चलाइहि तिवै चलह जिना मारगि पावहे।।''*

मेघ की बूंदों की गिनती हो जाये, धरती पर उपजी वनस्पतियों, खिले हुए फूलों को जान लिया जाये, जो कि अगण्य हैं, फिर भी श्री गुरु अमरदास जी के गुणों, उपकारों का वर्णन पूर्णरूपेण नहीं किया जा सकता।

चालीस मुक्तों में से एक शहीद भाई महां सिंघ

*-डॉ. राजेन्द्र सिंघ साहिल**

यदि मनुष्य से जाने-अनजाने में कोई भूल हो जाये तो इसके निवारण का एकमात्र उपाय रह जाता है-- सच्चे एवं साफ हृदय से क्षमा माँगना और अपने कर्तव्य-पथ पर दोबारा उसी पूर्व उत्साह के साथ डट जाना। श्री अनंदपुर साहिब के घेरे के समय सन् १७०४ ई. में माझा क्षेत्र के ४० सिक्ख श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को 'बेदावा' लिख कर दे आये थे और युद्ध में जूझ रहे गुरु को अकेला छोड़ घर को लौट गये थे। बाद में विवेक के जगने पर तथा माई भागो की प्रेरणा ने उन ४० सिक्खों को पुन: गुरु-कार्य में डटने को प्रेरित किया ये ४० सिक्ख शत्रु से युद्ध करते हुए 'खिदराणे की ढाब' (श्री मुकतसर साहिब) नामक स्थान पर शहीद हुए और 'चालीस मुक्ते' कहलाये। श्री मुकतसर साहिब की पवित्र भूमि आज भी इसकी गवाह है। इन्हीं चालीस मुक्तों में से एक थे--भाई महां सिंघ।

गुरु-भक्त परिवार में जन्म : भाई महां सिंघ का संबंध भाई मनी सिंघ जी के गुरु-भक्त खानदान से था। छठम पातशाह साहिब श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के परम सिक्ख भाई बल्लू इनके परदादा और भाई माई दास इनके दादा थे। भाई मनी सिंघ जी इनके सगे चाचा थे। इनके पिता भाई राय सिंघ थे। खिदराणे की जंग में शहीद होने वाले 'चालीस मुक्तों' में इनके पिता भाई राय सिंघ भी शामिल थे। भाई महां सिंघ का जन्म लाहौर के निकट स्थित एक गाँव मरल माड़ी में हुआ था।

गुरु-घर में लिखारी की सेवा : बड़े होकर ये श्री अनंदपुर साहिब आ गये और गुरु-घर की सेवा करने लगे । भाई महां सिंघ को लिखने-पढ़ने और हिसाब-किताब रखने की ज़िम्मेदारी दी गई थी।

खिदराणे की जंग में शहादत : भाई महां सिंघ के जीवन का सबसे बड़ा कारनामा 'खिदराणे की जंग' में शहादत प्राप्त करना है। भाई महां सिंघ उन चालीस सिक्खों में से एक थे जो श्री अनंदपुर साहिब के घेरे के समय दिसंबर सन् १७०४ ई. में दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को 'बेदावा' लिख कर दे आये थे और युद्ध में जूझ रहे दशमेश पिता को अकेले छोड़कर घर को लौट गये थे।

'बेदावा' लिख कर गुरु साहिब का साथ छोड़ आने वाले सिक्ख जब घर पहुँचे तो उनकी स्त्रियों ने लाखों लानतें-मलामतें कीं और गुरु जी की ओर से युद्ध लड़ने के लिए तैयारी करने लगीं। माई भागो जी इसमें पेश-पेश थीं। अपनी स्त्रियों

**१/३३८, स्वप्नलोक, दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा, लुधियाना— १४११०१, फोन : ६२३९६-०१६४१*

के इस रवैये को देखकर सिक्ख बहुत शर्मिन्दा हुए। उन्होंने गुरु पातशाह से क्षमा माँगने और पुनः युद्ध में शामिल होने का निश्चय किया।

माई भागो जी, भाई महां सिंघ और आपके पिता भाई राय सिंघ के नेतृत्व में यह सिक्ख-जत्था दक्षिण दिशा की ओर बढ़ रहे श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की सेवा में पहुँचने के लिए निकल पड़ा। मालवा क्षेत्र में पहुँच कर २ मई, सन् १७०५ ई. को 'खिदराणे की ढाब' के पास आपके जत्थे का सामना सूबेदार वज़ीर खान के लश्कर से हो गया। घमासान युद्ध शुरू हो गया। अनेक शत्रुओं को धराशायी करते-करते सारे सिक्ख बारी-बारी से शहीद होते चले गये। युद्ध ख़त्म होने के बाद सिक्ख 'शहादत' प्राप्त कर चुके थे। भाई महां सिंघ की सांसें अभी तक बाकी थीं। इतने में ही वहाँ दशम पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी आ पहुँचे।

आपने गुरु साहिब से 'बेदावा' फाड़ देने की विनती की। गुरु जी ने पल भर की देरी किये बिना 'बेदावा' फाड़ फेंका और सिक्खों को क्षमा कर मानसिक संतुष्टि प्रदान की।

जैसे-तैसे ३ मई, १७०५ ई. की सुबह हुई। गुरु जी ने भाई महां सिंघ और अन्य ३९ सिक्खों का अपने हाथों से अंतिम संस्कार किया। गुरु जी ने इन ४० सिक्खों की शहादत को गरिमा और मान्यता प्रदान करते हुए इन्हें 'चालीस मुक्ते' कह कर सम्मानित किया।

उपहार ऐसा जो जीवन भर याद रहे!

यह बात हर एक आम व खास व्यक्ति के मन को कचोटती रहती है कि वो अपने मित्रों, सम्बंधियों को यदि उपहार दे तो क्या दे। किसी के जन्म-दिन आदि या किसी विशेष दिवस पर किसी को कुछ भेंट किया जाए तो ऐसा उपहार हो जिसे स्वीकार करने वाला जिंदगी भर याद रखे। इसके लिए अब ज्यादा सोचने और चिंता करने की जरूरत नहीं है। जीवन भर का उपहार है-- 'गुरमत ज्ञान'। उपहार भी ऐसा कि जब प्रत्येक माह मित्र आदि के घर पर जाकर डाकिया 'गुरमत ज्ञान' की प्रति थमाएगा तो आपका मित्र आपका शुक्रिया करता नहीं थकेगा। आप अपने मित्र या किसी सम्बंधी को केवल १००/- रुपये में उपहारस्वरूप 'गुरमत ज्ञान' का आजीवन सदस्य बना दीजिए और हासिल कीजिए अपने मित्र की जीवन भर की खुशियां। यह सौदा बेहद सस्ता एवं लाभकारी रहेगा। आज ही मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट के जरिए चंदा भेजकर अपने मित्र या सम्बंधी को 'गुरमत ज्ञान' का आजीवन सदस्य बनाकर उसे इस बहुमूल्य उपहार से निवाजें !

-संपादक।

सिक्ख इतिहास का गौरवशाली दिवस : सरहिंद फतहि दिवस

-डॉ. कशमीर सिंघ नूर*

लासानी सिक्ख जरनैल, शूरवीर योद्धा और पराक्रमी बाबा बंदा सिंघ बहादुर के बारे में इतिहासकार डॉ. हरिराम गुप्ता लिखते हैं-- "जिस निडर, बहादुर सिक्ख योद्धा ने गुलामी की जंज़ीरें तोड़ते हुए मुगलों को पहली बार भारत के रणक्षेत्र में पराजित कर पराजय का मजा चखाया, उस महान सिक्ख, बलशाली योद्धा का नाम बाबा बंदा सिंघ बहादुर है। उन्होंने पहली बार मुगलों को सिक्खों की संगठन शक्ति का एहसास करवाया और उनके अपराजित होने के घमंड को तोड़ डाला।" डॉ. हरिराम गुप्ता का यह भी कथन है-- "बाबा बंदा सिंघ बहादुर, सिकंदर, नेपोलियन, नादिर शाह और अहमद शाह अब्दाली से कम शक्तिशाली योद्धा नहीं थे। उन्होंने अपने पराक्रम के उत्कर्ष काल में मुगलों के तीन बादशाहों-- बहादुर शाह, जहांदार शाह तथा फर्रुख्सियर को मुश्किलों में डाले रखा।"

अंग्रेज इतिहासकार मैकलेगर बाबा बंदा सिंघ बहादुर के बारे में लिखता है-- "बाबा बंदा सिंघ बहादुर, योद्धाओं व जरनैलों में उच्च कोटि का स्थान रखते हैं। उनका नाम ही पंजाब में तथा पंजाब से बाहर मुगलों में दहशत (खौफ) पैदा करने के लिए काफी था।"

ऐतिहासिक तथ्य गवाही भरते हैं कि बाबा बंदा सिंघ बहादुर सिक्ख इतिहास के एक अद्वितीय नायक, अति बहादुर, निडर और साहसी सेनापति हुए हैं। उन्होंने महमूद गज़नवी, तैमूर लंग तथा बाबर के खानदान से संबंधित बादशाहों की आन, बान, शान को मिट्टी में मिलाकर रख दिया।

संप्रभुता-संपन्न एवं स्वतंत्र सिक्ख साम्राज्य के संस्थापक और मुगलों के दमन व अत्याचारों के विरुद्ध तेग उठाने वाले निर्भीक, शूरवीर, बहादुर योद्धा बाबा बंदा सिंघ बहादुर का जन्म २७ अक्तूबर, १६७० ई. को जम्मू-कशमीर के पुंछ जिले के गांव राजौरी में पिता श्री रामदेव के घर हुआ। उनका परिवार एक साधारण कृषक परिवार था। उनके बचपन का नाम लक्ष्मण दास था। वे १५ वर्ष की आयु में ही घर-द्वार छोड़कर वैरागी साधु बन गए थे। वे बहुत कोमल स्वभाव, उदारचित्त एवं प्रसन्नचित स्वभाव के मालिक थे। एक गर्भवती हिरनी के शिकार के कारण उत्पन्न वैराग्य तथा पश्चाताप स्वरूप उन्होंने वैरागी बन जाना अच्छा समझा।

उन्होंने अपना नया नाम 'माधो दास' धारण कर लिया। विभिन्न स्थानों की यात्रा करने के बाद उन्होंने महाराष्ट्र के जिला नांदेड़ के निकट गोदावरी

*बी-एक्स-१२५, संतोखपुरा, हुशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४, फोन : ९८७२२-५४९९०

नदी के किनारे शांत व सुंदर स्थान पर अपना एक आश्रम बना लिया। इसी स्थान पर ही ३ सितंबर १७०८ ई. को श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की भेंट उनके साथ हुई। गुरु जी के दर्शन-दीदार कर माधो दास धन्य हो उठे। गुरु जी के सर्वोच्च आदर्शों, असीम, कुर्बानीयों एवं महान विचारों व इरादों ने माधो दास की विचारधारा ही बदल डाली। ''गुरु जी, मैं तो आपका बंदा'' कहने पर और उनके चरणों पर शीश झुकाने पर गुरु जी ने उन्हें अपना शिष्य (सिक्ख) बना लिया और उन्हें अमृत की दात बख्शिश की उनके नाम के साथ 'बहादुर' शब्द एक पदवी के तौर पर जुड़ गया था।

जालिम व क्रूर मुगल सरकार के अत्याचारों को खत्म करने और उसे कड़ा सबक सिखाने के लिए श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने बाबा बंदा सिंघ बहादुर को खालसा पंथ का जत्थेदार नियुक्त कर पंजाब भेजा। गुरु जी ने अपने तरकश में से पांच तीर, एक निशान साहिब और एक नगाड़ा देकर उन्हें आदेश दिया कि वे पंजाब में जाएं, सिक्ख सेना का गठन करें। भाई बाज सिंघ, भाई बिनोद सिंघ, भाई काहन सिंघ भाई रण सिंघ, भाई दया सिंघ पांच सिंघ (पांच प्यारे) और २० अन्य जांबाज़ सिक्ख बाबा जी के साथ रवाना किए गए। यह रवानगी अक्तूबर, १७०८ में हुई थी। इसी के साथ ही सिक्ख इतिहास का और खालसा पंथ की चढ़दी कला (उत्थान-काल) का नया दौर शुरू हुआ। बाबा जी की आगवानी में सिक्खों को शक्तिशाली मुगल सरकार से टक्कर लेने हेतु आदेशित करना दशमेश पिता जी का एक और अद्भुत कारनामा था।

नांदेड़ से दिल्ली तक बाबा बंदा सिंघ बहादुर के साथ बहुत कम संख्या में सिंक्ख थे। रोहतक-सोनीपत के क्षेत्र में प्रवेश करने पर सिक्खों की फौज में अभिवृद्धि हुई। सहेरी-खंडा नामक दो जुड़वां गांवों में रुककर आगामी रणनीति तैयार की गई। यहीं पर से बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने गुरु दशमेश पिता जी द्वारा सिक्खों के नाम लिखे गए हुकमनामे (आदेश-पत्र) सिक्ख संगत के पास भेजे। इनमें लिखा गया था कि सिक्ख बाबा बंदा सिंघ बहादुर के साथ मिलकर मुगलों के विरुद्ध संघर्ष तेज करें। बाबा जी ने अपनी ओर से भी संदेश भेज दिया कि वे सरहिंद के जालिम सूबेदार वज़ीर खान का नामोनिशान मिटाने हेतु आ रहे हैं।

गुरु जी का हुकमनामा और बाबा बंदा सिंघ बहादुर का संदेश मिलते ही सारी सिक्ख कौम जोश-ओ-जज़्बा से उठ खड़ी हुई। दिवंगत ज्ञानी भजन सिंघ अपनी पुस्तक 'साडे शहीद' (हमारे शहीद) में लिखते हैं-- ''माझा व मालवा क्षेत्र के लोग उमड़ पड़े। सभी लोगों ने हथियार उठा लिए और वे सरहिंद पर धावा बोलने के लिए चल पड़े। भाई माली सिंघ, भाई आली सिंघ, चौधरी राम सिंघ तथा भाई तरलोक सिंघ अपने-अपने जत्थे लेकर जंग हेतु व गुरु जी की खुशियां प्राप्त करने के लिए आ डटे।

बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने पंजाब पहुंचकर अपने साथियों के साथ सबसे पहले कसबा समाणा पर धावा बोला और अपनी जंगजू उपस्थिति ज़ोरदार ढंग से दर्ज़ करवाई। यहां की रियासत के नौकर जल्लाद जलालुद्दीन ने श्री गुरु तेग बहादर

साहिब को चांदनी चौक, दिल्ली में शहीद किया था। उस पापी को मौत के घाट उतार दिया।

समाणा के बाद घुड़ाम, ठसका, शाहबाद, मुस्तफाबाद, कपूरी, साढौरा, छत्त बनूड़ जैसे मुगलों के केंद्रों को बाबा जी ने अपने अधीन कर लिया। साढौरा के निर्दयी शासक उसमान खान ने हिंदुओं पर बहुत अत्याचार किए थे। उसने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की मदद करने के कारण पीर बुद्धू शाह को शहीद किया था, इसलिए उसे कड़ा सबक सिखाया गया।

फिर सरहिंद पर बड़े ज़ोरदार ढंग से धावा बोल दिया गया। बाबा बंदा सिंघ बहादुर में जोश, जज़्बा, बहादुरी, साहस, युद्ध-कौशल, रणनीतिक सूझबूझ, दृढ़ता की कोई कमी नहीं थी। माझा, दोआबा तथा मालवा क्षेत्रों से बहुत-से सिक्ख रणभूमि-कर्मभूमि में पहुंच गए। मुकाबला करने के लिए सरहिंद के नवाब वज़ीर खान ने आसपास के शासकों की सेनाएं इकट्ठा कर लीं। जो आदमी क्रूर, ज़ालिम और पापी हो, वह निडर व वीर होने का दिखावा कितना भी कर ले, मगर अंदर से भीरू होता है। वज़ीर खान के मन की हालत भी ऐसी ही थी।

१२ मई, १७१० ई. को चप्पड़चिड़ी के जंगे-मैदान में जांबाज़ सिंक्खों और अहंकारी व घमंडी मुगलों के दरमियान घमासान युद्ध शुरू हो गया। इस युद्ध में वज़ीर खान का सीधा मुकाबला भाई बाज सिंघ के साथ हुआ। फिर आक्रोश से भरे हुए भाई फतहि सिंघ भी वहां पहुंच गए। उन्होंने झपटकर कृपाण द्वारा वज़ीर खान का सिर धड़ से अलग कर दिया। बिन-पानी मछली की भांति वज़ीर खान का शरीर तड़प-तड़पकर ठंडा हो गया। इस युद्ध में सिक्खों ने उसके छोटे पुत्र एवं दामाद को भी मौत के घाट उतार दिया। 'जैसी करनी वैसी भरनी।'

वज़ीर खान की मृत्यु के बाद मुगल सेना के हौसले पस्त हो गए और वो जंग का मैदान छोड़कर भाग खड़ी हुई। पापी सुच्चानंद भी मारा गया। यह ऐतिहासिक, निर्णायक और घमासान युद्ध सरहिंद शहर से लगभग दस मील दूर हुआ था। बाबा बंदा सिंघ बहादुर के कुशल नेतृत्व में सिक्खों ने इस युद्ध में फतहि (विजय) प्राप्त की और अपने रहबर दशमेश पिता जी की खुशियां प्राप्त कीं। इस लाजवाब, लासानी, शानदार ऐतिहासिक फतहि को 'सरहिंद फतहि' कहा जाता है और इस ऐतिहासिक दिवस को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के नेतृत्व में प्रत्येक वर्ष मनाया जाता है।

रणबांकुरे सिक्ख विजयी शूरवीर योद्धा बन सरहिंद में दाखिल हुए। सिंक्खों ने सरहिंद की ईंट से ईंट बजा दी। यहां से उन्हें जनता का खून चूस कर एकत्र किया गया दो करोड़ रुपए का माल, नकदी और सोना-चांदी मिल गया। भाई बाज सिंघ को सरहिंद का गवर्नर (सूबेदार) नियुक्त कर दिया गया। भाई आली सिंघ को डिप्टी गवर्नर (नायब सूबेदार) लगाया गया। भाई फतहि सिंघ को समाणा तथा भाई राम सिंघ को थानेसर (कुरुक्षेत्र) का मुख्य प्रबंधक नियुक्त किया गया। सरहिंद पर फतहि हासिल होने के कारण शेष छोटे-छोटे मुगल शासकों ने बाबा बंदा सिंघ बहादुर

की अधीनता स्वीकार कर ली। इस गौरवशाली फतहि के ज़लज़ले, कारनामे ने मुगल सरकार की नींव हिलाकर रख दी। करनाल से लुधियाना तक बाबा बंदा सिंघ बहादुर की सरकार स्थापित हो गई। सरहिंद-फतहि का इतना अच्छा प्रभाव पड़ा कि हज़ारों हिंदू तथा मुसलमान अपने आप सिंघ सज गये। बाबा जी ने वर्षों से पंजाब (भारत) के पैरों में पड़ी कायरता की बेड़ियों, गले में पड़ी गुलामी की जंज़ीरों को तोड़ने की शानदार शुरूआत कर दी।

अपने उत्कर्ष काल के दौरान बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने स्वतंत्र सिक्ख राज्य की घोषणा कर दी। उन्होंने साढौरा के निकट स्थित मुखलिसपुर को अपना हेंड क्वार्टर बनाया और श्री गुरु नानक देव जी एवं श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के नाम पर सिक्का व मोहरें जारी कर दीं। ज़मींदारी (जागीरदारी) व्यवस्था को खत्म कर हलवाहकों (किसानों) को उनकी ज़मीनों के मालिक बना दिया तथा बंधुआ प्रणाली का अंत कर दिया। लोगों में आत्मसम्मान व आत्मविश्वास बढ़ाया गया।

तदुपरांत पंजाब से बाहर रहने वाले भारतीयों पर जुल्म ढाने वाले शासकों को सबक सिखाने एवं सजा देने का काम शुरू हुआ। बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने यमुना नदी के पार जलालाबाद को फतहि करने के बाद सहारनपुर पर कब्ज़ा कर लिया। बिहार के पीरज़ादा को पार बुलाया। उनकी जीत का सिलसिला निरंतर जारी रहा और लाहौर से लेकर सहारनपुर तक स्वतंत्र व सार्वभौमिक तथा संप्रभुत्ता-संपन्न सिक्ख राज्य का परचम (खालसा राज्य का झंडा) फहरा दिया।

बाबा जी केवल शूरवीर योद्धा ही नहीं थे, बल्कि लोकसेवक, क्रांतिकारी, प्रजापालक भी थे। उन्होंने गरीबों-मसकीनों को अपनी सरकार में उच्च पदों तक तायनात कर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के फलसफे (एलाननामा) ''इन गरीब सिक्खन को देऊँ पातशाही। याद करें ये हमारी गुरिआई'' को अमली जामा पहनाया। उनके इस काम को हमेशा याद रखा जाएगा, जो कि उन्होंने भूमि बंदोबस्त (ज़मींदारा प्रबंध) में सुधार कर भूमिहीन किसानों को भूमि के मालिक बनाया। काश! मैजूदा केंद्र सरकार तथा राज्य सरकारें भी भूमिहीन मज़दूरों व कृषकों को ज़मीनों के मालिक बनाने का शुभ एवं कल्याणकारी कार्य कर दिखाएं।

पड़ाव-दर-पड़ाव सफलता के झंडे गाड़ते हुए बाबा बंदा सिंघ बहादुर अपने सैनिकों सहित गुरदास नंगल की गढ़ी में मुगल सेना के घेरे में घिर गए। यह घिराव कई महीनों तक जारी रहा। फिर ७ दिसंबर, १७१५ ई. को शाही फौज़ ने गढ़ी पर कब्ज़ा कर लिया। बाबा जी को लगभग सात सौ सिक्खों सहित कैद कर जुलूस की शक्ल में २७ फरवरी, १७१६ ई. को दिल्ली ले जाया गया। बाबा जी की पत्नी व उनके चार वर्षीय पुत्र अजै सिंघ को अलग तौर पर बंदी बनाया गया था। बंदी सिक्खों को शहीद करने के बाद ९ जून, १७१६ ई. को पहले उनके पुत्र अजै सिंघ को उनकी आँखों के सामने शहीद किया गया और बाद में बाबा बंदा सिंघ बहादुर को घोर यातनाएं देकर शहीद कर दिया गया।

छोटा घल्लूघारा

-डॉ. तेजिंदरपाल सिंघ*

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने ख़ालसा को अपने दैवी गुण प्रदान कर 'सतिगुर पूरा'[१] कह कर नवाजा है। 'प्रेम सुमारग' के अनुसार जिन गुरसिक्खों का सम्बन्ध सीधा गुरगद्दी के साथ होता है, उन्हें 'खालसा' ख़िताब मिलता।[२] 'खालसा' अकाल पुरख की फ़ौज है, जो अकाल पुरख की मौज़ में से प्रकट हुआ है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने संस्थागत तौर पर गुरगद्दी ख़ालसे में प्रकट की है :

खालसा मेरो रूप है ख़ास।
खालसे महि हौ करौ निवास। (सरबलोह ग्रंथ)

खालसा गुरु वाले गुण धारण करने पर गुरु में अभेद हो जाता है। इस तरह ख़ालसे में गुरु की कला बरतने लग जाती है, जिसके सहारे वह भी दातार-रूप हो जाता है :

खालसे के प्रसाद करि सुत वित कोस भंडार।
राज माल सादन सकल पुत्र कलत्र बिवहार।
लसकर नेब खवास भ्रित अनुचर दासी दास।
मित्र कुटंब धन भवन मम
सम्रिधि क्रिपा करि तास।
गिरंबारी अर साहिबी तन मन पिंड प्रान।
प्रसाद खालसहि करि मिलयो
दान मान सनमान।
क्रिपावंत खालस सगल तहि
प्रसाद भयो गौरि।
मुहि सै रंक अनाथ जग भटकत फिरत करोरि।
सेव खालसहि की सफल पूजा
सतवन अरघ पाद।
दान मान सनमान करि
खोड़स बिधि कहु सवाद।
आन सेव नहि सफल कछ इत ऊत परलोक।
निहफल सेवा तिस बिना
कबी हरख कबि सोक। (सरबलोह ग्रंथ)

अकाल पुरख वाहिगुरु व श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी और ख़ालसे में रंचक-मात्र भेद नहीं, तीनों एक रूप ही हैं :

आतम रस जे जानही सो है खालस देव।
प्रभ महि मो महि तास महि रंचक नाहिन भेव।
(उक्त, भाग द्वितीय)

अठारहवीं सदी के संकट-काल में पंथ के अहम फ़ैसले गुरमते के रूप में होते रहे हैं। गुरमते की यह परंपरा पंथ ने गुरु की हैसियत से शुरू की थी। 'गुरमते' का अर्थ 'गुरु का प्रस्ताव' अर्थात् 'गुरु का फ़ैसला' है। ऐतिहासिक तौर पर गुरमते की संस्था ही सिक्खी के अति मुश्किल दौर में ख़ालसे की जत्थेबंदक शक्ति को दृढ़ता प्रदान करती रही है।

सिक्ख इतिहास रक्त-रंजित इतिहास है, जो शहादतों और कुर्बानियों से भरपूर है। ऐतिहासिक दृष्टि से सिक्ख धर्म में शहादतों का सिलसिला श्री गुरु अरजन देव जी की शहादत से शुरू होता है। समय के शासक सिक्ख धर्म के विस्तार को

*सहायक प्रोफेसर (धर्म अध्ययन), युनिवर्सिटी कॉलेज, मीरांपुर, जिला पटियाला। फोन : ९९८८०-०४७३३

बरदाश्त न कर सके। श्री गुरु अरजन देव जी तक विरोधियों की ईर्ष्या शिखर पर पहुँच गई। उस समय के मुग़ल बादशाह जहाँगीर ने श्री गुरु अरजन देव जी को शहीद करवा कर अपनी ईर्ष्या को विराम देने की कोशिश की। निष्कर्ष के तौर पर श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने सिक्ख धर्म में मीरी-पीरी का सिद्धांत दृढ़ करवाया, जिससे सिक्खों के अंदर संत-सिपाही की भावना जागृत हुई। इस सिद्धांत को श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने और भी प्रबलता के साथ लागू करने के लिए खालसा पंथ की सर्जना की। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने जनमानस को इज्जत और स्वाभिमान के साथ जीना सिखाया। उनके ज्योति-जोत समा जाने के पश्चात् बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की बख्शिश द्वारा मुगलों की ईंट के साथ ईंट बजा दी। बाबा बंदा सिंघ बहादुर की शहादत के बाद भी सिक्खों ने मुगलों के साथ टक्कर लेनी न छोड़ी। इसके अंतर्गत अहमद शाह अब्दाली के समय दो अहम घटनाएँ घटीं, जिन्हें छोटा व बड़ा घल्लूघारा के नाम से याद किया जाता है। इनमें से छोटा घल्लूघारा के बारे में विचार-चर्चा करनी इस लेख का मुख्य उद्देश्य है।

सिक्ख स्मृति में दीवान लखपत राय (लाहौर के सूबेदार याहिया ख़ान का वज़ीर) के साथ काहनूंवान (जिला गुरदासपुर) के छंभ (जोहड़) के निकट १७४६ ई. में हुए युद्ध को 'छोटा घल्लूघारा' या 'पहला घल्लूघारा' कहा जाता है। इससे लगभग १६ वर्ष पश्चात् १७६२ ई. (संवत् १८१८) में अहमद शाह दुर्रानी के साथ कुप्प रोहीड़ा (जिला संगरूर) नामक स्थान पर जो लड़ाई हुई, वह सिक्ख इतिहास में 'बड़ा घल्लूघारा' नाम से प्रसिद्ध हुई।

छोटा घल्लूघारा की दासतां जानने से पहले 'घल्लूघारा' का अर्थ, पृष्टभूमि, कारण, निष्कर्ष आदि पर विचार-चर्चा की जायेगी।

घल्लूघारा : अर्थ : 'महान कोश' के अनुसार 'घल्लूघारा' के अर्थ हैं-- तबाही, गारती या सर्वनाश अर्थात् ऐसा युद्ध जिसमें भारी जानी नुकसान हुआ हो।

छोटा घल्लूगारा : पृष्टभूमि : छोटा घल्लूघारा के कारणों को जानने से पहले इसकी पृष्टभूमि को समझना आवश्यक है। ज़िक्रयोग्य है कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के ज्योति-जोत समाने से लेकर याहिया ख़ान (ज़करिया खान का पुत्र) के समय तक सिक्ख संघर्ष बड़े ज़ोरों पर रहा। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के ज्योति-जोत समा जाने के बाद बाबा बंदा सिंघ बहादुर के नेतृत्व में सिक्ख जत्थेबंद होने लगे थे। बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी से प्रोत्साहन प्राप्त कर मुगलों के साथ टक्कर ली। निष्कर्ष के तौर पर बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने अनेक स्थानों पर विजय प्राप्त की। बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने पहले सिक्ख राज की स्थापना कर अपना सिक्का चलाया, परंतु उनका राज-भाग ज्यादा समय तक न चल सका। बाबा बंदा सिंघ बहादुर और उनके साथी सिंघों को १७१६ ई. में दिल्ली में शहीद कर दिया गया। उसके बाद पंजाब में मुग़ल राज की जुल्म भरी आँधी पुन: चल पड़ी। शासकों ने हुक्म जारी किया कि सभी सिक्खों को कत्ल कर दिया जाये। इस प्रकार सिक्खों की संख्या दिनो-दिन घटने लगी।

१७२६ ई. में अबदुसमद ख़ान के पुत्र ज़करिया

ख़ान को लाहौर का सूबेदार स्थापित किया गया। ज़करिया ख़ान के शासन-काल में सिक्खों पर बहुत ज़ुल्म किये गए। भाई मनी सिंघ जी की शहादत के बाद ज़करिया खान सिक्खों का पक्का शत्रु गया।

इसके बाद नादिर शाह ने १७३९ ई. में भारत पर आक्रमण कर ज़करिया ख़ान से शाही खजाना छीन लिया। नादिर शाह लूट-मार कर जब वापस जा रहा था तो सिक्खों ने अचानक हमला कर नादिर शाह की फौज को खदेड़ना शुरू कर दिया। यह देख कर नादिर शाह बहुत घबरा गया। उसने ज़करिया ख़ान से मिल कर सिक्खों के बारे में पूछताछ की। ज़करिया ख़ान ने जब सिक्खों के बारे में बताया कि ये फ़कीर लोग हैं और इनके घर घोड़ों की काठियों पर हैं, ये लोग चने को बादाम समझ कर खाते हैं तो नादिर शाह ने सिक्खों की बहादुरी की तारीफ़ करते हुए कहा कि वाकई इनसे डरना चाहिए। उसने सिक्खों की बहादुरी देख कर स्वाभाविक रूप से कहा कि ये लोग एक दिन अवश्य इस देश के मालिक बनेंगे। ज़करिया ख़ान इस बात को हज़म न कर सका और उसने सिक्खों का नामोनिशान मिटाने का हुक्म दे दिया। यह समय सिक्खों के लिए इम्तिहान का समय था।

१७४५ ई. में ज़करिया ख़ान की मृत्यु के बाद उसका पुत्र याहिया ख़ान पंजाब का सूबेदार बना। उसने सत्ता में आते ही सिक्खों पर सख़्ती कर दी, जिसके परिणामस्वरूप 'छोटा घल्लूघारा' घटित हुआ।

छोटा घल्लूघारा : कारण : छोटा घल्लूघारा का सबसे अहम कारण एमनाबाद के फ़ौजदार जसपत राय के कत्ल के साथ जुड़ता है। लाहौर की मुग़ल सेना ने १७४६ ई. में जब सिक्खों को खदेड़ा तो इनमें से एक जत्थे का मुकाबला एमनाबाद से दूर २५ किलोमीटर की दूरी पर स्थित बदो की गुसाईआं में हुआ।

भाई कान्ह सिंघ नाभा के अनुसार भाई निबाहू सिंघ रंघरेटे ने जसपत राय के हाथी पर चढ़ कर उसका सिर काट दिया। जसपत राय की मृत्यु होने के कारण उसकी सारी फ़ौज घबरा गई। अपनी जान बचाने के लिए वह मैदान छोड़ कर भाग गई। जसपत राय की मृत्यु के बारे में सुन कर उसका भाई लखपत राय बड़े गुस्से में आया। सूबेदार याहिया ख़ान ने भी अपने फ़ौजदार के मारे जाने का बहुत अफ़सोस मनाया। निष्कर्षत: पूरे पंजाब में सिक्खों के कत्ल-ए-आम का हुक्म दे दिया गया। लखपत राय ने यह बात अपने मन में ठान ली कि वह सिक्खों का खुरा-खोज मिटा कर ही चैन से बैठेगा। उसने याहिया ख़ान को घमंड भरे लहजे में कहा कि "जब तक मैं सिक्खों का नामोनिशान न मिटा दूं, तब तक अपने सिर पर पगड़ी नहीं बाँधूंगा। यह पंथ एक क्षत्रिय ने खड़ा किया है और अब एक क्षत्रिय ही इसका नाश करेगा।"

सिक्खों के कत्ल-ए-आम का आरंभ सबसे पहले लाहौर से हुआ। लाहौर में रोज़ाना बहुत-से सिक्खों के सिर काटे जाने लगे। यह हुक्म किया गया था कि जो आदमी किसी सिक्ख का सिर काट कर लायेगा, उसे उसके बदले में इनाम दिया जायेगा। इस प्रकार सिक्खों का कत्ल-ए-आम दिनो-दिन बढ़ने लगा। इसके अलावा यह भी हुक्म दिया गया कि जो भी गुरबाणी पढ़ता या सुनता देखा

जाये, उसे वहीं मार दिया जाये। इसके साथ ही यह भी हुक्म जारी हुआ कि कोई भी व्यक्ति बाणी का पाठ न करे और न ही गुरु का नाम ले। 'गुड़' को 'रोड़ी' या 'भेली' कहा जाये, क्योंकि 'गुड़' शब्द कहने से 'गुर' (गुरु) याद आता है। इसी प्रकार 'ग्रंथ' कोई न बोले, 'पोथी' कहा जाये।

हुक्मरान द्वारा लाहौर शहर के सिक्खों को भंगियों (तथाकथित निम्न मानी जाने वाली जाति) के हवाले कर दिया गया और कहा "ये केश वाली खोपड़ियाँ सब उतार दो।" यह घटना १० मार्च, १७४६ ई. को घटी। बहुत-से ग़रीब सिक्ख, जो लाहौर में रहते थे, याहिया ख़ान के हुक्मानुसार कत्ल किये गए। इसके अलावा गाँवों में से भी चुन-चुन कर सिक्ख मार दिए गए। याहिया ख़ान के हुक्म से दीवान लखपत राय ने हैदरी झंडा (दीन मजहब के जेहाद के नाम तले) खड़ा करवा कर जंगलों में छिपे हुए सिक्खों का बीज नाश करने के लिए बाकायदा फ़ौजी चढ़ाई की।

लखपत राय ने गुरबाणी की पोथियों को जहाँ तक हो सका, ढूँढ-ढूँढ कर अग्नि और पानी की भेंट कर दिया। इस प्रकार सिक्खों की धार्मिक पोथियाँ ख़त्म कर दी गईं। साथ ही हज़ारों की संख्या में धर्मशालाएं तबाह कर दी गईं। ऐसे में लखपत राय ने शहर में निवास कर रहे सिक्खों को खत्म कर जंगल में रहने वाले सिक्खों को खत्म करने की तैयारी की।

इस समय (१७४६ ई.) बहुत-से सिक्ख राणी दे झल्ल में तथा और काहनूंवान के छंभ में रह रहे थे। लखपत राय ने झल्लों को आग लगवा दी, ताकि रास्ते चौड़े हो जाएं और खालसा फ़ौज को घेरने की योजना सरलता से बनाई जा सके। सिक्खों के लिए यह समय बहुत विपदा का समय था। एक तो ये दुश्मन के मुकाबले संख्या में बहुत कम थे, दूसरा, उनके पास दुश्मन के मुकाबले का गोला-बारूद भी नहीं था। तीसरा, जंगल में प्रत्येक सुविधा मिलना असंभव था।

दुश्मन की फौज ने धीरे-धीरे काहनूंवान के छंभ को घेरा डालना शुरू कर दिया। सिक्खों का अब छंभ से बाहर निकलना मुश्किल था, क्योंकि एक तरफ़ तो पहाड़िए थे और दूसरी तरफ दक्षिण दिशा में रावी दरिया था। इसके अलावा पूरब दिशा में ब्यास दरिया था। छंभ के सिक्खों ने धीरे-धीरे लड़ते हुए बसौली (ज़िला कठुआ) की तरफ निकलना शुरू किया, परंतु पहाड़ियों ने उस तरफ़ भी गोलियाँ दागनी शुरू कर दीं। इसके बाद सिक्खों ने सलाह की कि माझा क्षेत्र की तरफ निकला जाये, परन्तु रावी का बहाव तेज़ होने के कारण कोई सिक्ख दरिया पार न कर सका। स. गुरदयाल सिंघ डल्लेवाल और स. हरदयाल सिंघ डल्लेवाल दोनों भाइयों ने दरिया की गहराई मापने के लिए अपने घोड़े रावी दरिया में ठेल दिए। पानी की रफ़्तार तेज़ होने के कारण दोनों भाई घोड़ों सहित दरिया में बह गए। अंततः सिक्खों ने यह निर्णय भी बदल दिया।

सिक्खों ने लम्बी सोच-विचार के बाद फ़ैसला किया कि लखपत राय को जीतने की अपेक्षा पहाड़ियों को जीत लेना आसान है, इसलिए सिक्खों ने पहाड़ियों पर हमला बोल कर एक मोर्चा सर कर लिया। घोड़ों के लिए पहाड़ों पर चढ़ना आसान नहीं था, केवल पैदल चल कर ही चढ़ा जा सकता था। गुरमता पारित हुआ कि जो पैदल हैं, वे

पहाड़ों की तरफ बढ़ें और जो घुड़सवार हैं, वे दुश्मनों की कतार को तेज़ी के साथ चीर कर पार लगें।

भाई सुक्खा सिंघ तथा साथी सिक्खों ने फ़ैसला किया कि खालसा आमने-सामने होकर लड़ेगा। दरिया में डूबने या पहाड़ों में भटकने से अच्छा है कि सामने होकर लड़ा जाये। इस प्रकार खालसा फ़ौज लड़ने के लिए तैयार हो गई। चाहे मुकाबला कठिन था, परन्तु सिक्खों ने हिम्मत न हारी। प्रमुख सरदारों के नेतृत्व में शाही फ़ौज के साथ भयानक युद्ध हुआ। भाई सुक्खा सिंघ के नेतृत्व में सिक्ख फ़ौज बड़ी बहादुरी के साथ लड़ी। शाही फ़ौज संख्या में ज़्यादा होने के कारण सिक्ख चारों तरफ से घिर गए थे। भाई सुक्खा सिंघ लखपत राय की तरफ बढ़ रहा था, तभी अचानक एक गोली भाई साहिब की टांग में आ लगी। भाई सुक्खा सिंघ ने घायल अवस्था में भी हिम्मत न हारी। उसने अपनी पगड़ी फाड़ कर घायल टांग को घोड़े की काठी के साथ बांध लिया और घायलावस्था में लड़ता रहा। चाहे इस घेरे में सैकड़ों सिक्ख शहीद हो गए, परन्तु सिक्खों ने अपना हमलावर रुख जारी रखा। जब रात को शाही फ़ौज आराम कर रही थी तो सिक्खों ने मौका पाकर हमला कर दिया और उनके घोड़े व शस्त्र लूट लिए।

इसके पश्चात् सिक्खों ने लाहौर की तरफ बढ़ना शुरू कर दिया। ज्येष्ठ-आषाढ़ की तीक्ष्ण धूप में भूखे, नंगे सब कुछ सहारते हुए सिक्ख मालवा की धरती की तरफ निकल गए। हज़ार के लगभग सिक्खों ने पहाड़ों की तरफ कूच कर दिया और बाकी ढाई-तीन हजार सिक्ख मालवा क्षेत्र में पहुँच गए। सात-आठ हजार सिक्ख घल्लूघारा की भेंट चढ़ गए। इस घल्लूघारा में जितना नुकसान सिक्खों का हुआ, पहले कभी भी उनका इतना नुकसान नहीं हुआ था। तीन हज़ार सिक्खों को कैद कर लाहौर के दिल्ली गेट की तरफ नख़ास चौंक में ले जाकर शहीद कर दिया गया, जिसे 'शहीद गंज' का दर्जा दिया गया। यह साका १ मई, १७४६ ई. को घटित हुआ, जो कि सिक्ख इतिहास में 'छोटा घल्लूघारा' के नाम के साथ जाना जाता है।

इस घल्लूघारे में हज़ारों सिक्ख शहीद हुए, सैकड़ों सिंक्खों का ख़ून बहा और अनेक ज़ख़्मी हुए। सिक्खों पर हुए इस हमले ने खालसा पंथ को और भी शक्ति के साथ लड़ने की प्रेरणा प्रदान की, जिसके परिणामस्वरूप शहादतों का सफ़र जारी रहा।

निष्कर्ष के तौर पर कहा जा सकता है कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के ज्योति-जोत समाने से लेकर छोटा घल्लूघारा तक अनेक सिक्ख शहीद हुए। बेशक सिक्खों को बड़ी मुश्किलों का सामना करना पड़ा, उन पर मुसीबतों के पहाड़ टूट पड़े, परंतु उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। गुरु साहिब की निष्ठा में रहते हुए उन्होंने सहर्ष शहादत प्राप्त की। इन शहीदों को हम रोज़ाना अरदास में याद करते हैं। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के बाद यह पहली बार था जब सिक्खों ने सामूहिक रूप से शहादत प्राप्त की हो।

हवाला-सूची :

१. खालसा मेरो सतिगुर पूरा। (श्री सरबलोह ग्रंथ, भाग द्वितीय), पृष्ठ ५३१.
२. प्रेम सुमारग ग्रंथ, पृष्ठ १.

सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया की शख्सियत

-डॉ. परमवीर सिंघ*

श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर साहिब की परिक्रमा में एक विशालकाय प्राचीन बुंगे के दर्शन होते हैं। श्री दरबार साहिब की सुरक्षा करने के लिए सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया (१७२३-१८०३ ई.) ने इसका निर्माण करवाया था। सरदार जस्सा सिंघ के समय यह बुंगा संपूर्ण नहीं हो पाया था। जब यह बुंगा महाराजा रणजीत सिंघ के अधीन आया तो उन्होंने इसके आकार को और ऊँचा ले जाने से रोक दिया था।[१] फिर भी जितना ऊंचा बुंगा दिखाई दे रहा है वह संगत के आकर्षण का केंद्र बना रहता है। इस बुंगे के १५६ फुट ऊँचे दो मीनार शत्रु पर नज़र रखने के लिए बनाए गए थे, जो कि हमें उस समय की युद्ध-नीति और भवन-निर्माण कला की याद दिलाते हैं। इस बुंगे में पत्थर की एक सिल (शिला) संभाल कर रखी हुई है जो कि बादशाह की ताजपोशी के समय इस्तेमाल की जाती थी। इसकी लंबाई ६ फुट ३ इंच, चौड़ाई ४ फुट ६ इंच और मोटाई ९ इंच है। १७८३ ई. में सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया, सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया, सरदार बघेल सिंघ तथा अन्य सिक्ख सरदारों की सामूहिक फौज ने दिल्ली पर आक्रमण कर विजय प्राप्त की थी। दिल्ली फतह करने के पश्चात् सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया ने यह सिल लाकर अपने बुंगे में संभाल ली थी और उस समय से ही यह यहाँ पर विद्यमान है। घल्लूघारा जून, १९८४ ई. के समय इस बुंगे को भी भारी क्षति पहुँची थी। बाद में इसकी मरम्मत कर इसे सुंदरता प्रदान की गई है।

इस बुंगे को देखते ही मन अतीत की घटनाओं और सिक्ख शूरवीरों की याद में चला जाता है। प्रसिद्ध सिक्ख सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया इस बुंगे के साथ जुड़ा हुआ ऐसा पात्र है, जिसने अठारहवीं सदी के दौरान सिक्खी पहचान और स्वाभिमान को बनाए रखने के लिए रक्त-रंजित युद्ध किए थे। समय की हुकूमत और हमलावर सिक्खों का खुरा-खोज मिटाने के लिए यत्नशील थे। वे यह समझते थे कि श्री दरबार साहिब को नेस्तानाबूद कर अपने उद्देश्य की पूर्ति कर लेंगे, मगर वे यह नहीं जानते थे कि सिक्खों की शक्ति का यह स्रोत उनके मन में बसता है, जिसे वे कभी नहीं मिटा सकते। १७५६ से १७६४ ई. तक तीन बार श्री दरबार साहिब को अफगान हमलावरों ने गिरा दिया था,[२] मगर प्रत्येक आक्रमण के बाद सिक्ख इसे दोबारा बना लेते थे। इस महत्वपूर्ण स्थान की सुरक्षा के लिए एक किले का निर्माण

*सिक्ख विश्वकोष विभाग, पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला— १४७००२, फोन : ८९७२०-७४३२२

किया गया, जिसे 'राम रौणी किला' के नाम से साथ जाना जाता है।

सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया सिक्ख संघर्षी परिवार से थे। इनके दादा सरदार हरदास सिंघ ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी से अमृत की दाति (देन) प्राप्त की थी। गुरु जी की प्रेरणा से जब बाबा बंदा सिंघ बहादुर नांदेड़ से पंजाब आए तो इन्होंने उनके साथ मुग़ल फ़ौज के विरुद्ध होने वाले युद्धों में भाग लिया था। १७१५ ई. में होशियारपुर के निकट बजवाड़ा नामक स्थान पर जब इनका मुकाबला मुग़ल फ़ौज के साथ हुआ तो उसमें बहुत-से सिक्ख शहीद हो गए थे, जिनमें सरदार हरदास सिंघ भी थे। इनका लड़का भाई भगवान सिंघ था जो कि बलवान और सिक्खी आस्था में सुदृढ़ था। श्री गुरु ग्रंथ साहिब का ज्ञान होने के कारण इन्हें 'ज्ञानी भगवान सिंघ' भी कहा जाता था। १७३८ ई. में भारत पर नादिर शाह ने हमला किया तो उसके विरुद्ध लड़ते हुए ये शहीद हो गए थे। इनके पाँच पुत्र थे-- जस्सा सिंघ, जै सिंघ, माली सिंघ, खुशहाल सिंघ और तारा सिंघ। सरदार जस्सा सिंघ सबसे बड़े पुत्र थे, जिन्हें सिक्खी की लगन घर में से ही पिता-दादा के जीवन को देख कर प्राप्त हुई थी। इन्होंने सिक्खों की जो मिसल गठित की वह 'रामगढ़िया मिसल' नाम से प्रसिद्धि प्राप्त कर गई थी।

लाहौर के निकट ही ईचोगिल्ल (इच्छोगिल्ल) गाँव में पैदा हुए सरदार जस्सा सिंघ ने छोटी उम्र में ही जंगी दांव-पेच सीखना आरंभ कर दिए थे और जल्दी ही युद्धों में भाग लेने लगे थे। युद्ध-कला में प्रवीण सरदार जस्सा सिंघ बातचीत में होशियार और शक्तिशाली शरीर वाले सरदार थे। नादिर शाह के आक्रमण के पश्चात् सिक्खों ने पंजाब में ज़ोर पकड़ना शुरू कर दिया, तो लाहौर के सूबे ज़करिया ख़ान ने अदीना बेग को जलंधर का फ़ौजदार नियुक्त कर दिया था। ज़करिया ख़ान ने सिक्खों को दबाने का आदेश दिया, जिसका उन्होंने थोड़ा-बहुत पालन भी किया। अदीना बेग सिक्खों को दबाने की बजाय उनके साथ ऐसे सम्बन्ध स्थापित करने का ज्यादा इच्छुक था, जिन्हें समय आने पर वह अपने हित के लिए इस्तेमाल कर सके। पंजाब में सिक्ख ही ऐसी ताकत थे जिनके सहयोग के बिना बाहरी ताकतों का सामना करना किसी भी हाकिम के लिए अति कठिन था और इनके साथ सम्बंध बिगाड़ कर पंजाब के अंदर शान्ति बनाए रखना असंभव था। अदीना बेग सिक्खों को दबा कर लाहौर के सूबे को मज़बूत नहीं करना चाहता था, जिससे उसके अपने अस्तित्व को भी ख़तरा पैदा हो जाना स्वाभाविक था। उस समय सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया और सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया सिक्खों के सम्मानित जरनैल थे। अदीना बेग ने उनके साथ सांठ-गांठ करने के लिए दूत भेजे। सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया ने तो उसके साथ किसी प्रकार का सम्बंध स्थापित करने से मना कर दिया, परंतु सरदार जस्सा सिंघ ईचोगिल्लीए ने (कूटनीति के अंतर्गत) उसके साथ संधि करना स्वीकार कर लिया। अदीना बेग नौरंगाबाद की लड़ाई में

सरदार जस्सा सिंघ के हाथ देख चुका था और उनकी वीरता, साहस व राजनैतिक सूझ-बूझ से बहुत प्रभावित हुआ था। अदीना बेग ऐसे जरनैल को अपने हाथ में रखने का इच्छुक था। जहाँ वह अपने मतलब के लिए सरदार जस्सा सिंघ को इस्तेमाल करना चाहता था, वहीं सरदार जस्सा सिंघ अपनी नीति के अनुसार चले जा रहे थे। आम ख़्याल यह है कि अदीना बेग के पास रहकर वे सिक्खों के विरुद्ध मुगलों द्वारा इस्तेमाल किए जाते जंगी दांव-पेच को गहराई के साथ समझना चाहते थे। शायद उनका यह ख़्याल हो कि मुगलों में रह कर वे अपनी कौम की अधिक सेवा कर सकेंगे।[३]

इस दृष्टि से सरदार जस्सा सिंघ को एक सुघड़ नीतीवान[४] कहा जा सकता है जो कि दुश्मनों द्वारा इस्तेमाल किए जाते जंगी तौर-तरीकों को उनकी दृष्टि से समझने की हिम्मत रखते थे। सरदार जस्सा सिंघ में एक बढ़िया नीतिवान वाले गुण देखने को मिलते हैं जो कि उन्होंने अपनी शक्ति बढ़ाने और सिक्खों में अपना आधार मज़बूत करने के लिए इस्तेमाल किए थे। शारीरिक तौर पर चुस्ती, फुर्ती और तुरंत फ़ैसले लेने की सामर्थ्य उनका बड़ा गुण था, जिसकी सहायता से वे स्थानीय मुग़ल हाकिमों और सिक्खों में आकर्षण का कारण बने रहे। उनके इसी गुण को देखते हुए अदीना बेग उनसे बहुत प्रभावित हुआ। सरदार जस्सा सिंघ १०० सवारों सहित उसकी फ़ौज के साथ काम करने लगे। वे जहाँ मुगलों की जंगी चालों और फ़ौजी शक्ति से अवगत हुए, वहीं उन्होंने अपना प्रभाव इस्तेमाल कर यथासंभव सिक्खों को बचाने का कार्य भी किया। राम रौणी के किले में जब सिक्ख बुरी तरह से घिर गए थे और वहाँ घिरे हुए ५०० सिक्खों में से २०० सिक्ख मारे गए थे तथा शेष बचे सिक्खों ने गढ़ी में से बाहर निकल कर लड़ते हुए शहादत प्राप्त करने का फ़ैसला कर लिया था, तो सरदार जस्सा सिंघ की सहायता से वे बच सके थे। वे उस समय घेरा डालने गई जलंधर और लाहौर की फ़ौज में शामिल थे। वे अपने सिक्ख भाइयों को इस प्रकार अपनी आँखों के सामने मरते हुए न देख सके और घिरे हुए सिक्खों की मदद के लिए बादशाह की फौज को छोड़ कर गढ़ी में प्रवेश कर गए। अंदर जाकर न केवल उन्होंने अपने धर्मी-भाइयों की मदद की बल्कि उन्होंने अपनी सूझ-बूझ का प्रयोग करते हुए लाहौर के दीवान कौड़ा मल्ल से कह कर वहाँ लंबे समय से पड़े हुए फ़ौजी घेरे को उठवा दिया था, नहीं तो उस किले में मौजूद समूह सिंघों के मारे जाने का ख़तरा पैदा हो गया था। उनकी इस नीति द्वारा न केवल सिक्खों की जान बची थी, बल्कि मीर मन्नू ने परगना पट्टी के मामले में से आधा हिस्सा सिक्खों को जागीर के तौर पर देना स्वीकार कर लिया और श्री दरबार साहिब के पुराने बारह गाँवों का ज़ब्त हुआ मामला बहाल कर दिया था।[५]

सरदार जस्सा सिंघ के नीतिवान होने के गुणों का ज़िक्र डॉ. हरि राम गुप्ता भी अपनी पुस्तक 'हिस्ट्री ऑफ दी सिक्खस' में करता हुआ बताता है कि सरदार जस्सा सिंघ ने अपनी नीति के

अनुसार उस समय के भारत में रह रहे अंग्रेज़ गवर्नर लार्ड वैलज़ली के साथ पत्र-व्यवहार भी किया था। वह अफगानों (शाह जमान) के विरुद्ध अंग्रेज़ों की सहायता चाहता था, ताकि पंजाब में शांति कायम रखी जा सके। गवर्नर जनरल ने अपने जवाबी पत्र में शाह के वापस लाहौर लौट आने की संभावना को रद्द करते हुए सरदार जस्सा सिंघ को दूरदर्शी और बुद्धिमान कहा था।[६]

सरदार जस्सा सिंघ अपनी सूझ-बूझ और रणनीति के अंतर्गत अपनी मिसल को मज़बूती प्रदान कर रहे थे, क्योंकि उन्हें बाहरी और आंतरिक हमलावरों के साथ एक ही समय लोहा लेना पड़ रहा था। उस समय के सत्ता-शोरशराबे में यह पता लगाना कठिन कार्य था कि कौन किसकी सहायता कर रहा है, कौन-सा आंतरिक शासक बाहरी हमलावरों को अपने स्वार्थ हेतु बुला रहा है। स्वार्थी वृत्ति वाले लोगों ने देश में ऐसी अफरातफरी पैदा कर दी थी कि यह देश धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक तौर पर खोखला होता जा रहा था। कम संख्या में होते हुए भी ऐसे समय में सिक्खों की विजय का कारण यह था कि वे गुरु-शब्द के साथ जुड़ कर, सर्वसाधारण के कल्याण हेतु, एक खालसई निशान के तले संघर्ष कर रहे थे। बाहरी हमलावर का मुकाबला करने के लिए सिक्खों की सभी जत्थेबंदियाँ मिल कर यत्न कर रही थीं। सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया सिक्खों के जरनैल के तौर पर इतिहास के पन्नों पर अपने वजूद का प्रकटीकरण कर रहे थे। दूसरे सिक्ख सरदारों के साथ मिल कर उन्होंने कई सामूहिक मुहिमों में अहमद शाह अब्दाली से लोहा लिया था। १७६२ ई. में अब्दाली ने सिक्खों का बड़े स्तर पर सफाया करने का यत्न किया था, जिसमें ३० हज़ार से भी ज्यादा सिक्ख शहीद हो गए थे। मलेरकोटला के निकट कुप्प रुहीड़ा नामक स्थान पर घटी इस बड़ी दुखदायी घटना को 'बड़ा घल्लूघारा' नाम से जाना जाता है। सिक्खों का भारी जानी और माली नुकसान कर वापस जाते समय अब्दाली ने सिक्खों के केंद्रीय धर्म-स्थान श्री दरबार साहिब को भी गिरा दिया था। उस समय सिक्खों की कमान सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया और सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया के हाथ में थी। इनके नेतृत्व में अब्दाली को सिक्खों के भारी विरोध का सामना करना पड़ा था।

बड़े घल्लूघारे वाली घटना के तुरंत बाद सिक्ख शीघ्र ही पुन: खड़े हो गए थे और चार महीने में ही इन्होंने अब्दाली द्वारा सरहिंद में नियुक्त किये हाकिम जैन ख़ान को हरा कर उससे भारी भेंट वसूल कर ली थी। सिक्खों ने यह फ़ैसला कर लिया था कि दुर्रानियों के पंजाब में पैर जमने नहीं देंगे। चाहे दुर्रानियों की फौज की संख्या सिक्खों से बहुत ज़्यादा थी, लेकिन फिर भी सिक्ख अपनी हस्ती का डंका बजाते रहते थे। १७६६ ई. में अहमद शाह अब्दाली ने भारत पर एक बार फिर आक्रमण कर दिया और इस बार भी उसे सिक्खों के भारी विरोध का सामना करना पड़ा था। ब्यास दरिया के किनारे हुए अफगान-सिक्ख युद्ध में सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया और

सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया के नेतृत्व में सिक्खों ने उसका डट कर मुकाबला किया था। इस लड़ाई में सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया गंभीर रूप से घायल हो गया था और लड़ाई की कमान सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया के हाथ में रही थी। इस लड़ाई में अहमद शाह अब्दाली एक बार युद्ध-क्षेत्र में लड़ने के लिए कूदा, परन्तु सरदार जस्सा सिंघ ने अनोखी तरह के युद्ध के पैंतरे इस्तेमाल कर एशिया के प्रसिद्ध जरनैल अब्दाली को धूल चटा दी।[७]

इस हमले के बाद अहमद शाह अब्दाली का पंजाब से प्रभाव पूर्णरूपेण ख़त्म हो गया था और सिक्खों के साथ पुनः टक्कर लेने की बजाय वह वापस काबुल चला गया था।

सरदार जस्सा सिंघ ने जलंधर के फ़ौजदार अदीना बेग के साथ मिल कर भी कई युद्ध लड़े थे और अपने साहस व बहादुरी से सभी योद्धाओं का ध्यान अपनी तरफ आकर्षित किया था। अदीना बेग के निधन के बाद उसके कई इलाकों को सरदार जस्सा सिंघ ने अपने अधीन कर लिया था। बटाला, कलानौर, दीनानगर, श्री हरिगोबिंदपुर, शाहपुर कंडी, कादियाँ, घुमाण आदि इलाके उनके कब्ज़े में आ गए थे, जिन्हें सामूहिक रूप से रिआड़की कहा जाता था। उनकी विजेता मुहिमों की चर्चा चारों तरफ़ फैली हुई थी, जिसका लाभ उठाते हुए वे लाहौर तक जा पहुँचे। पंजाब के बहुत-से इलाकों पर अधिकार जमाने के बाद उन्होंने पहाड़ी रियासतों की तरफ अपना ध्यान केंद्रित किया। उन्होंने कांगड़ा, नूरपुर, जसवान, हरीपुर, कटोच, चम्बा आदि इलाकों के हाकिमों को अपनी अधीनता स्वीकार करने के लिए विवश कर दिया था। पहाड़ी रियासतों में से कांगड़ा की विजय पर टिप्पणी करते हुए कहा गया है कि ''यह विजय सिक्ख राज के इतिहास में बड़ी महानता रखती है, क्योंकि इस विजय ने पंजाब की बाकी पहाड़ी रियासतों पर विजय पाने की जीत के लिए सिक्खों का रास्ता साफ़ कर दिया। इस विजय के साथ सरदार जस्सा सिंघ का दबदबा बहुत बढ़ गया और बाकी रियासतों पर अपना अधिकार ज़माना उनके लिए बहुत आसान हो गया था। यहाँ तक कि कई पहाड़ी राजाओं ने बिना लड़ाई के सरदार जस्सा सिंघ को सालाना कर देकर उनकी अधीनता स्वीकार करने का फ़ैसला कर लिया।''[८]

सरदार जस्सा सिंघ ने पहाड़ी राजाओं की रियासतों पर काबिज़ होने की बजाय उन्हें अधीनता स्वीकार कर लेने के लिए विवश कर दिया था, क्योंकि यदि वे उन पर स्थायी रूप से कब्ज़ा कर अपना राज-प्रबंध उन पर थोपते, तो एक तो उन रियासतों में उनके प्रति और ज्यादा विरोध एवं आक्रोश पैदा हो जाना स्वाभाविक था, दूसरा पहाड़ी सत्ता के प्रबंध में होने वाले अतिरिक्त व्यय से भी वे बच गये थे और तीसरा, उन्होंने मैदानी इलाकों में कब्ज़े अधीन इलाकों की तरफ और ज्यादा ध्यान दिया, जहाँ उन्हें पहाड़ियों की अपेक्षा ज्यादा ख़तरा लगता था।

सिक्ख सरदारों का जब कोई साझा दुश्मन न रहा तो इलाकों के विभाजन को लेकर उनकी

आपस में लड़ाई आरंभ हो गई। इसी खींचतान में सरदार जस्सा सिंघ दोआबा छोड़ कर मालवा की तरफ़ आ गए थे। मालवा से पानीपत और करनाल के इलाके से भेंट प्राप्त करते हुए वे मेरठ तथा मथुरा के इलाके तक जा पहुँचे। किसी की उन्हें रोकने की हिम्मत न हुई। वापस लौटते हुए दिल्ली जा पहुंचे, वहां पर भी किसी की उनके साथ मुकाबला करने की हिम्मत न हुई और वे वहाँ से चार तोपें तथा बहुत सारा सामान लेकर वापस लौट गए। दूसरी तरफ़ दोआबा में शुकरचक्किया और कन्हईआ मिसल की आपस में बिगड़ गई। सरदार महां सिंघ शुकरचक्किया को यह इल्म था कि यदि सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया उसकी सहायता करें तो वह आसानी से कन्हईए सरदार पर विजय प्राप्त कर सकता है। उसने अपनी इस लड़ाई में भाग लेने के लिए सरदार जस्सा सिंघ को मना लिया और कन्हईए सरदार के इलाके पर हमला कर दिया। इस लड़ाई में सरदार जस्सा सिंघ के हाथों कन्हईआ मिसल के प्रमुख जै सिंघ का पुत्र गुरबख़्श सिंघ मारा गया और लड़ाई ख़त्म हो गई।

सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया ने अपने सभी पुराने इलाकों पर फिर कब्ज़ा कर लिया। महाराजा रणजीत सिंघ का विवाह कन्हईआ मिसल के जै सिंघ की पोती और लड़ाई में मारे गए गुरबख़्श सिंघ की बेटी के साथ हो गया। कन्हईआ और शुकरचक्किया मिसलों में पैदा हुई कड़वाहट जब रिश्तेदारी में बदली तो इन्होंने मिल कर रामगढ़िया मिसल के ख़िलाफ़ मुहिम छेड़ दी। महाराजा रणजीत सिंघ की सास सदा कौर ने उसे सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया पर हमला करने के लिए मना लिया और मियानी के किले में उसे जा घेरा। सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया चतुर और साहसी योद्धा थे। उन्होंने किला छोड़ने या भाग निकलने की बजाय किले के अंदर से ही उनके साथ मुकाबला जारी रखा। प्रकृति ने सरदार जस्सा सिंघ का साथ दिया और वहाँ निकट बहते ब्यास दरिया में बाढ़ आ गई। महाराजा रणजीत सिंघ की सेना का बहुत नुकसान हुआ। आखिर उसे घेरा उठाना पड़ा।

सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया ने एक विजेता जरनैल के तौर पर पंजाब के एक बड़े पहाड़ी और मैदानी इलाके पर कब्ज़ा कर लिया था। उनकी विजेता मुहिमों ने उनके इलाके में भारी विस्तार किया था। यहाँ तक कि कटोच में अहमद शाह के डिप्टी घमंड चंद और दूसरे पहाड़ी राजपूत राजा उनके बाज़गुज़ार (ठेके पर इलाका लेकर बादशाह को कर देने वाला इलाकेदार) बन गए थे। अब उसका शासन सतलुज और ब्यास दरिया के मध्य उत्तरी दिशा में पूरे देश में फैल गया था, जिसमें बिसत जलंधर का एक बहुत बड़ा भाग शामिल था।[१] उनके जीवन में यह समय ऐसा था कि उनकी मिसल की ताकत का मुकाबला करने के लिए किसी की हिम्मत नहीं पड़ती थी। ''आस-पास के हाकिम उस तरफ़ नज़र उठा कर नहीं देख सकते थे। इस समय इस मिसल में सवारों की संख्या १८००० तक पहुंच चुकी थी और सारा मुल्क ३५ लाख से भी

अधिक था। ३६० मजबूत किले इनके अधिकार-क्षेत्र में थे। रामगढ़िया इस समय घर-घर राजा बने हुए थे।''[१०] उनके जीवन से सम्बन्धित घटनाओं से पता चलता है कि उनकी पारिवारिक पृष्टभूमि चाहे बढ़ईगिरी व्यवसाय से सम्बन्धित थी, परन्तु उनकी शख्सियत में उनके पैतृक व्यवसाय की अपेक्षा वीर योद्धा के गुण ज्यादा मात्रा में प्रकट होकर सामने आते हैं, जिन्होंने उन्हें पंजाब के एक बड़े भूभाग पर काबिज़ होने में योगदान दिया था।

सरदार जस्सा सिंघ की शख्सियत में से उनका सिक्खी प्रेम किसी से कम नहीं था। उन्होंने सिक्खी सिद्धांतों को जीवन में ग्रहण किया। वे आजीवन उनकी रौशनी में ही इलाके जी और लोगों की सेवा करते रहे। सिक्खी सिद्धांतों के अनुसार वे हमेशा गरीबों और बेसहारों की सहायता करते। इसकी एक मिसाल उनके जीवन में उस समय देखने को मिलती है जब रिआड़की का इलाका छिन जाने के बाद वे हिसार के इलाके में घूम रहे थे। हिसार के गवर्नर को सज़ा देने के लिए सरदार जस्सा सिंघ ने उस पर हमला कर दिया था, क्योंकि उसने एक ब्राह्मण की दो बेटियाँ जबरन घर पर रख ली थीं। उन्होंने दोनों लड़कियाँ उससे लेकर उनके पिता को सौंप दी थीं।[११]

सरदार जस्सा सिंघ हमेशा अकाल पुरख की रज़ा में रहने वाले व्यक्ति थे। वे हिसार के इलाके में थे कि आर्थिक तंगी ने उनकी फौज को बेचैन कर दिया। बात यहाँ तक पहुँच गई कि फौज ने यह सोचना शुरू कर दिया कि जिस सरदार के पास कोई इलाका ही नहीं, वह हमें पैसे कहाँ से देगा! यह बात सरदार जस्सा सिंघ तक पहुँची तो उन्होंने मुस्करा कर कहा, जिसने यह सरदारी प्रदान की है, इसकी लाज भी वो खुद ही रखेगा। ज्ञानी गिआन सिंघ लिखते हैं कि ''उन्होंने एक जगह बैठ कर, अंतर्ध्यान होकर वाहिगुरु के समक्ष अरदास की कि हे सच्चे पातशाह! परदेस का मामला है। ऐसे समय में सहायता करें! अरदास करने के बाद प्यास लगी। आदमी को कुएं से पानी लेने के लिए भेजा। पानी निकालते वक्त लोटा कुएं में गिर गया। लोटा निकालने के लिए जब आदमी कुएं में घुसा तब उसको कुएं में से चार संदूक मिले। बाहर निकालने पर खोले गए जिनमें से ४ लाख मोहरें निकलीं। उन्हें मुँह माँगी मुराद मिली। अचानक इतनी मात्रा में धन हाथ आ जाने पर सरदार जस्सा सिंघ अत्यंत प्रसन्न हुए। उन्होंने अकाल पुरख का धन्यवाद करते हुए सभी मोहरें फ़ौज में बाँट दीं।''[१२]

गुरु-आशय के अनुसार चलने वाले उनके गुणों ने उनके अंदर धर्म-युद्ध करने का चाव पैदा किया था, जिससे पंजाब के लोग अफगानों की बजाय ऐसे जरनैलों की अधीनता स्वीकार करने और उनके संरक्षण में रहना पसंद करने लगे थे। यह बात विश्व-प्रसिद्ध है कि स्थानीय सहायता के बिना कोई जरनैल या हमलावर किसी इलाके पर ज्यादा समय तक काबिज़ नहीं रह सकता। सरदार जस्सा सिंघ जैसे सिक्ख सरदारों में लोक-कल्याण वाले गुणों ने ही उन्हें रेगिस्तान, पहाड़ों की गुफाओं और जंगलों में से निकाल कर पंजाब

के हाकिम बनाया था।

सरदार जस्सा सिंघ चढ़दी कला (प्रसन्नावस्था) में रहने वाले शख्स थे। उन्होंने जीवन में बहुत उतराव-चढ़ाव देखे थे। हर समय अकाल पुरख की रज़ा और चढ़दी कला में रहना उनका विशेष गुण था, जिसने उन्हें कठिन से कठिन समय में भी विचलित नहीं होने दिया था। भले ही उन्होंने पंजाब में एक बड़े इलाके पर कब्ज़ा कर लिया था परन्तु उनका जीते हुए इलाकों पर अधिकार ज्यादा लम्बे समय तक कायम न रह सका। उन्होंने बाहरी हमलावरों से छीन कर जिन इलाकों पर कब्ज़ा किया था उन्हें उनके अपने ही मिसलदार भाइयों ने छीन लिया था। जिन भाइयों के साथ मिल कर उन्होंने दुर्रानियों को भगाया था उनके द्वारा ही उनके इलाकों पर काबिज़ हो जाने से उनके मन में आक्रोश तो था ही, मगर वे कभी निराश नहीं हुए थे। उन्हें अपना इलाका छोड़ कर पंजाब के दूसरे इलाकों, उत्तर प्रदेश और राजस्थान के इलाकों में जाने के लिए विवश होना पड़ा था। उनके जोश और उत्साह में कभी कमी नहीं आई थी। उन्होंने हांसी, हिसार, मथुरा, मेरठ और राजस्थान के कई इलाकों के हाकिमों से अधीनता स्वीकार करवा कर उनसे भेंट वसूल की थी। उनके इलाके छिन जाने के बाद भी उनके मान-सम्मान और उनकी लोकप्रियता में कोई कमी नहीं आई थी। उनकी हिम्मत और बहादुरी को अफगान भी मानते थे। ज़िंदगी के हर मोड़ पर वे अकाल पुरख को अंग-संग जान कर उसकी रज़ा में रहने का यत्न करते और अगले निश्चित किए निशानों की प्राप्ति के लिए लगातार यत्नशील रहते थे। उनके इस आशावादी नज़रिए ने उनके अंदर बेहद शूरवीरता पैदा करने में योगदान डाल दिया था। उन्हें किसी मोड़ पर डगमगाने नहीं दिया था। उनके इस गुण के कारण ही उन्हें विभिन्न मिसलदार अपनी सहायता के लिए बुलाते रहते थे।

सरदार जस्सा सिंघ जैसा गुणी जरनैल अपने समय की कठिन घाटियों को पार करते हुए ८० वर्ष की आयु में अकाल प्रस्थान कर गए। उनका समूचा जीवन विशुद्ध गुरु-आशय के अनुसार चलने वाला था। उनकी काबलियत, बहादुरी और समझदारी की मिसालें आज भी पेश की जाती हैं।

हवाला-सूची :

१. The Bunga for some reason or others was only half finished and the towers were not yet domed, because it was the intention of the Sirdars to raise them higher. But Ranjit Singh at once ordered that the towers be raised no higher and all the materials and many pillars and pieces of stone and marble very beautifully engraved he sent to Ram Bag (now called Company bagh) which he was preparing as a pleasure ground. There was such a large stock of building materials that after using all that was required for the garden the remainder were stocked and employed afterwards in the preparation of the last bed for the Lion of the Punjab in the Guru Garden where free from the anxieties of the world he sleeps calmly and quietly. Sirdar Sundar Singh Ramgarhia, The annals of Ramgarhia Sirdars (1902), p. 35. कर्नल इकबाल सिंघ

सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया के वंशज हैं, जिन्होंने इस बुंगे के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करते हुए बताया कि भले यह बुंगा उनके बुजुर्ग सरदार जस्सा सिंघ ने तैयार करवाया था और यह पंथ का स्वामित्व था लेकिन १८१६ ई. में सरदार जोध सिंघ रामगढ़िया के निधन के पश्चत् महाराजा रणजीत सिंघ ने इसे अपने कब्ज़े में ले लिया था। इनके एक पूर्वज सरदार मंगल सिंघ ने पेशावर के निकट जमरौद में हुए युद्ध में दिखाई बहादुरी के दौरान पुरस्कार के रूप में महाराजा रणजीत सिंघ से इसे वापस प्राप्त किया था। उस समय से ही यह बुंगा उनके परिवार का स्वामित्व बन गया था और इसे 'बुंगा सरदार मंगल सिंघ' कहा जाता था। कर्नल इकबाल सिंघ खुद भी उसी बुंगे में निवास करते रहे हैं और १९७२ ई. में इनके परिवार ने यह बुंगा शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को सौंप दिया था। रामगढ़िया सरदारों तथा बुंगे से सम्बन्धित इन्होंने The Quest For the past शीर्षकाधीन एक पुस्तक लिखी है, जिसमें से सरदारा जस्सा सिंघ रामगढ़िया से लेकर समूह रामगढ़िया सरदारों एवं बुंगे की बीसवीं सदी तक की स्थिति के बारे में बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

२. Ian J. Kerr, Harimandar, in The Encyclopaedia of Sikhism, vol. II, ed. by Harbans Singh, p. 241

३. प्रिथीपाल सिंघ कपूर, सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया, पृष्ठ ४०.

४. नीतिज्ञों द्वारा किसी भी प्राप्ति के लिए चार प्रमुख साधन माने गए हैं –– साम-भाषा द्वारा क्रोध शांत करना, दाम–धन देकर प्रसन्न करना, दंड–– शस्त्र और बल द्वारा दंडित करना, भेद–– फूट पैदा कर कार्य सिद्ध करना। भाई कान्ह सिंघ नाभा, गुरशबद रत्नाकर महान कोश, पृष्ठ ७१७.

५. ज्ञानी सोहण सिंघ सीतल, सिक्ख मिसलां ते सरदार घराणे, पृष्ठ ५९.

६. Hari Ram Gupta, History of the Sikhs, vol. iv, p. 481

७. गुरनाम सिंघ राय, जस्सा सिंघ रामगढ़िया, पृष्ठ १२९.

८. प्रिथीपाल सिंघ कपूर, सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया, पृष्ठ ७३.

९. Syed Muhammad Latif, History of the Panjab (1891), p. 308

१०. सूरज सिंघ दरबारा सिंघ, इतिहास रामगढ़िया, पृष्ठ ४२४- २५.

११. Syed Muhammad Latif, History of the Panjab (1891), p. 308; One day a Brahman complained to Sirdar Jassa Singh Ramgarhia that the Governor of Hissar had carried off his two daughters by force. He at once marched against the place, which he took and sacked. He lew the Nawab with his own hands and restored the girls to their father. Fearing lest the local Brahmans in their blind bigotry might outcaste the girls the Sirdar collected all the Brahmans of the district and obliged them to take food from the hands of the girls. Sundar Singh Ramgarhia, The annals of Ramgarhia Sirdars (1902), P. 8.

१२. ज्ञानी गिआन सिंघ, तवारीख गुरू खालसा, भाग द्वितीय, पृष्ठ २३७.

खालसा राज का बहादुर योद्धा : सरदार हरी सिंह नलूआ

*- बीबी रजवंत कौर**

संसार में सबसे अधिक बहादुर और शहीद पैदा करने का फख्र खालसा कौम को प्राप्त है और इन बहादुरों एवं शहीदों का जीवन- इतिहास खालसा कौम की जिंद-जान है। देश की आज़ादी और उन्नति के लिए युद्ध या परिश्रम करते हुए मरने वाले व्यक्ति को 'शहीद-ए-वतन' कहा जाता है और ऐसे शहीदों की खालसा कौम में कमी नहीं।

महाराजा रणजीत सिंघ द्वारा स्थापित किए गए खालसा राज में अनेक शेरदिल, जाँबाज, बहादुर, साहसी योद्धाओं की बात करें तो सभी एक से बढ़कर एक हैं। इन योद्धाओं ने दुश्मन की सेना के सामने अकेले रह जाने पर भी मैदान नहीं छोड़ा, बल्कि दुश्मन का बहादुरी के साथ डट कर मुकाबला किया और खालसा राज के इतिहास को अपने लहू से सींच कर प्रफुल्लित किया। इन बहादुर योद्धाओं का ज़िक्र हमेशा होता रहेगा और सिक्ख कौम को इन पर सदा फख्र भी रहेगा। महाराजा की फ़ौज में सरदार हरी सिंघ नलूआ एक ऐसा योद्धा था जो हमेशा सिक्ख इतिहास में चमकता सितारा बन कर सामने आता रहेगा। कादरयार अपनी 'सीहरफियां' में लिखता है :

रणजीत सिंघ सरदार दे अफसरां नूँ,
डिट्ठा नज़र मैं पा के सारिआं विच।
कादरयार बहादरां विच चमके,
हरी सिंघ जिउं चंन तारिआं विच।

सरदार हरी सिंघ नलूआ का जन्म शुकरचक्किया मिसल के कुमेदान (एक सैन्य पदाधिकारी) सरदार गुरदयाल सिंघ व माता धर्म कौर के घर १७९१ ई. में गुजरांवाला में हुआ। आप जी अपने माता-पिता की इकलौती संतान थे। सन् १७९८ ई. में आपकी आयु सात वर्ष थी कि आप जी के पिता का देहांत हो गया। माता धर्म कौर सरदार हरी सिंघ को साथ लेकर अपने भाई के पास चले गए और वहाँ आप जी की परवरिश हुई। प्रसिद्ध समकालीन लेखक हमीदुल्ला शाहबादी 'कश्मीरी' अपनी पुस्तक 'अकबरनामा' में लिखता है कि सरदार हरी सिंघ नलूआ शक्ल से खूबसूरत, दिल से साहसी लासानी शख्सियत का मालिक और अद्वितीय तेज वाला था। वह सरदार हरी सिंघ के व्यक्तिगत गुण, कर्म और स्वभाव के बारे में लिखता है कि तीखे नयन-नक्श, रंग गोरा, कद मध्यम, न ज्यादा ऊँचा और न ज्यादा छोटा, शारीरिक तौर पर फुर्तीला, अक्ल का तेज़ और इल्म-हुनर का धनी, शस्त्र-अस्त्र विद्या में पूरी तरह से निपुण, आचरण

**गुरमति लेक्चरर (सेवानिवृत्त), शहीद सिक्ख मिशनरी कॉलेज, श्री अमृतसर साहिब— १४३००१, फोन : ८१४६६-५०४४९*

में विशुद्ध, सतिसंगी, विद्वानों का प्रेमी, देश-विदेश की राजनैतिक दशा का जानकार, देश-कौम की सेवा के जज़्बे वाला, राजनैतिक कार्यों का विशेषज्ञ, दहाड़ से शत्रु की जान निकालने वाला, जीवन के हर क्षेत्र में दक्ष, अच्छे घोड़े का शाह-सवार, मिष्टभाषी और सिक्ख राज का एक वफ़ादार योद्धा जरनैल था।

१४-१५ वर्ष की आयु में उसने युद्ध-कौशल की पूरी जानकारी प्राप्त कर ली थी। जहाँ वह नेज़ाबाजी और शमशेरजनी में अपनी नज़ीर खुद था, वहीं वो तीर और बंदूक के साथ गोली का सही निशाना लगाने में भी प्रवीण था। खालसा दरबार, लाहौर के सरदारों के मुकाबले में सरदार हरी सिंघ पंजाबी, उर्दू, फ़ारसी और पशतो भाषा में निपुण था। इसी इलमियत और ख़ानदानी ख़ूबी के कारण शेर-ए-पंजाब महाराजा रणजीत सिंघ आपकी दिल से कद्र करते थे। जब कभी भी लाहौर दरबार की तरफ से अंग्रेज़ सरकार के पास कोई मिशन या डेलिगेशन भेजा जाता तो सरदार हरी सिंघ को प्रमुख नेता के रूप में नियुक्त किया जाता था। सन् १८३१ ई. में रोपड़ मुलाकात के सम्बंध में इतिहास में से कई हवाले मिलते हैं। राजा धिआन सिंघ और गुलाब सिंघ डोगरे कम पढ़े-लिखे होने के कारण ऐसे कार्यों के लिए नहीं चुने जाते थे। आपकी योग्यता और कर्त्तव्यनिष्ठा के कारण ही महाराजा रणजीत सिंघ आपकी दिल से कद्र करते थे।

खालसा कौम के बच्चों की उन्नति और नौजवानों का साहस बढ़ाने के लिए महाराजा शेर-ए-पंजाब, पंजाब की राजधानी लाहौर में बसंत पंचमी के पर्व पर दस दिवसीय दरबार का आयोजन किया करते थे, जिसमें पंजाब के सभी नौजवान बहादुरी के करतब और जिस्मानी ताकत के कमाल पेश किया करते थे। कामयाब होने वालों को नकद इनाम के अलावा फ़ौज की 'बच्चा पलटन' में भरती कर लिया जाता था। १८०५ ई. के बसंत दरबार में सरदार हरी सिंघ ने शमशेरजनी और घुड़सवारी सहित कई करतब महाराजा के सामने पेश किये। शेर-ए-पंजाब आपके ये गुण देख कर बड़े प्रभावित हुए और अपने पास बुला कर अपना बहुमूल्य कैंठा (आभूषण) आपके गले में डाल दिया। जब महाराजा ने घराने की पूछताछ की तो अहलकारों ने बताया कि यह नौजवान बहादुर शुकरचक्किया मिसल के कुमेदान सरदार गुरदयाल सिंघ (उप्पल) का पुत्र है। यह सुन कर महाराजा को बहुत ख़ुशी हुई। उसी वक्त सरदार हरी सिंघ को अपनी हजूरी में ख़िदमतगार नियुक्त कर लिया।

खालसा दरबार में कुछ महीनों बाद आप एक दिन महाराजा के साथ शिकार खेलने गए। शिकारगाह में घुसते ही एक शेर छलाँग लगा कर सरदार हरी सिंघ की तरफ लपका। सरदार हरी सिंघ ने दृढ़ इरादे के साथ दोनों हाथों से शेर को जबाड़े से पकड़ कर घुमाते हुए दूर फेंका और झट से अपनी कृपाण म्यान में से निकाल कर शेर का सिर धड़ से अलग कर दिया। उस समय महाराजा के साथ पंडित बिहारी दरबारी चित्रकार भी मौजूद था। उसने महाराजा के हुक्म द्वारा

सरदार हरी सिंघ की शेर के साथ लड़ाई की तसवीर तैयार की, जिसकी दो प्रतिलिपियां सरदार हरी सिंघ को महाराजा ने प्रदान कीं। इनमें से एक चित्र (प्रतिलिपि) सरदार हरी सिंघ ने विश्व-प्रसिद्ध यात्री बैरन हूगल को ८ जनवरी, १८२१ ई. को दिया, जिसे देख कर वह अति प्रसन्न हुआ। महाराजा ने खुश होकर सरदार हरी सिंघ को 'नलूआ' (नलवा) की उपाधि प्रदान की और अपनी शेर-दिल रेजिमेंट का 'सरदार-ए-आहला' मुकर्रर कर आठ सौ सवार एवं पैदल सेना का अधिकारी नियुक्त कर दिया। आप अपनी योग्यता और अद्वितीय कारणों से न केवल खालसा फ़ौज के 'कमांडर-इन-चीफ़' के उच्च पद पर पहुँचे, बल्कि कश्मीर, हज़ारा और पेशावर के गवर्नर भी बने। सरदार नलूआ ने पेशावर और कश्मीर से अपने नाम पर 'हरी सिंघीए सिक्के' जारी किये, जो खालसा राज की समाप्ति के कई वर्ष बाद तक भी चलते रहे।

१८०७ ई. में सरदार हरी सिंघ नलूआ ने कसूर की जंग में बहादुरी और जंगी-पैंतरेबाजी से विजय हासिल की। कसूर का नवाब कुतुबुद्दीन ख़ान कसूरिया नवाब मुज़फ्फर ख़ान के साथ मिल कर खालसा राज के विरुद्ध युद्ध की तैयारी कर रहा था। महाराजा के कहने पर फ़कीर अजीजुद्दीन और स. फतेह सिंघ कालियां वाले को जंग के ख़ून-खराबे के सम्बंध में समझाया, परंतु उसने उल्टा बदसलूकी की। महाराजा ने फ़ौज को कूच करने का हुक्म दिया। सरदार हरी सिंघ नलूआ अपनी शेरदिल रेजिमेंट सहित नौशहरा पहुँच गया। १० फरवरी, १८०७ ई. को हमला किया गया। २७ फरवरी तक गोलाबारी होती रही। आखिर २७ फरवरी को सरदार हरी सिंघ ने किले की दीवारों के नीचे बारूद भर कर आग लगा दी। गाजी सेना किला छोड़ कर भाग गई और खालसा फ़ौज ने किले पर कब्ज़ा कर लिया। २८ फरवरी को महाराजा ने दरबार लगा कर कसूर की फतह में प्रदर्शन करने वालों को जागीर व पदोन्नति प्रदान की। सरदार हरी सिंघ नलूआ की बहादुरी की भरे दरबार में प्रशंसा करते हुए तीस हज़ार रुपए सालाना जागीर प्रदान कर ८०० सवारों का कमांडर मुकर्रर कर दिया।

सन् १८१० ई. में सरदार हरी सिंघ ने मुलतान के शासक नवाब मुजफ्फर ख़ान को पराजित कर मुलतान पर विजय प्राप्त की। इस जंग में सरदार निहाल सिंघ अटारी और सरदार हरी सिंघ बुरी तरह से आग द्वारा झुलस गए। जब कई महीने इलाज चलने के बाद तंदरुस्त हुए तो महाराजा ने दरबार लगा कर सरदार हरी सिंघ नलूआ की बहादुरी की प्रशंसा करते हुए २० हज़ार रुपए सालाना की और जागीर इनाम में दी।

१८१२ ई. में शेर-ए-पंजाब ने सरदार हरी सिंघ और सरदार दल सिंघ रंधावा को टिवाणों का नाश करने का हुक्म दिया। इन दोनों सरदारों ने ७ फरवरी, १८१२ ई. को हमला किया और अहमद यार ख़ान को पराजित कर मिट्ठी टिवाणे की गढ़ी पर खालसा राज का झंडा झुलाया।

१८१३ ई. में अटक पर विजय प्राप्त की। महाराजा रणजीत सिंघ को पता था कि अटक के

किले पर विजय प्राप्त किए बिना पंजाब में शांति स्थापित नहीं हो सकती, क्योंकि जितने भी हमलावर पंजाब पर हमला करते थे, वे इसी रास्ते आते थे। दीवान मोहकम चंद व सरदार हरी सिंघ ने अटक पर चढ़ाई कर दोस्त मुहम्मद ख़ान को मौत के घाट उतार दिया और अटक के किले पर कब्ज़ा कर लिया। इस विजय से अफगानों के दिल में ख़ालसे की बहादुरी के भय का इतना सिक्का बैठा कि अफगानी स्त्रियां अपने बच्चों को सरदार नलूआ का नाम लेकर डराती थीं। इस सम्बंध में सैयद मुहम्मद लतीफ लिखता है कि उसका दबदबा अफगानों के दिल में ऐसा बैठ गया कि आज तक माताएं बच्चों को 'हरिआ रांगले' कह कर डराती हैं। स. शमशेर सिंघ अशोक ने भी अपनी रचना 'वीर नायक हरी सिंघ नलवा' में लिखा है कि पठान स्त्रियां अपने बच्चों को यह कह कर शांत करवाती थीं–– ''चुप शा, हरिआ रांगले!''

मुलतान के नवाब मुज़फ्फ ख़ान को मारने के लिए सरदार हरी सिंघ ने १५ फरवरी, १८१८ ई. को मुलतान शहर पर चढ़ाई की और शहर का लाहौरी दरवाज़ा उड़ा कर अपनी रेजिमेंट सहित शहर में दाख़िल हो गया। तीन महीने जंग चलती रही। आखिर अकाली फूला सिंघ की मदद से किले के दरवाज़े का बुर्ज गिरा दिया और खालसा फ़ौज किले के अंदर दाख़िल हो गई। २३ मई, १८१८ ई. को खालसा फ़ौज का मुलतान पर कब्ज़ा हो गया। महाराजा ने दरबार लगा कर सरदार हरी सिंघ की जागीर दुगनी कर दी।

महाराजा ने २० अप्रैल, १८१९ ई. को शहज़ादा खड़ग सिंघ, सरदार हरी सिंघ नलूआ और अकाली फूला सिंघ को कश्मीर पर चढ़ाई करने के लिए रवाना किया। इन सरदारों ने राजौरी, पुंछ और श्रीनगर को जीतने के बाद ३ जुलाई, १८१९ ई. को कश्मीर पर हमला किया। आमने-सामने तेगें चलीं और दिन भर गोलाबारी होती रही। कश्मीर का गवर्नर नवाब जब्बार ख़ान अचानक सरदार हरी सिंघ के सामने आ गया। सरदार नलूए ने बड़ी फुर्ती के साथ उसका हाथ काट दिया, जिसमें उसने तेग पकड़ी हुई थी। घबरा कर नवाब भाग निकला। उसे भगौड़ा होता देख कर उसकी फ़ौज भी नौ दो ग्यारह हो गई। खालसा फ़ौज ने कश्मीर पर कब्ज़ा कर लिया। आठ पीढ़ियों से चलते आ रहे इसलामी राज का अंत हो गया। इस विजय से खुश होकर महाराजा ने सरदार हरी सिंघ को सारी फ़ौज का निगरान नियुक्त कर दिया और धंनी का इलाका, जिसकी मालियत छः हज़ार रुपए थी, जागीर के तौर पर दे दिया गया।

इसके बाद हज़ारे की बग़ावत को रोका और महाराजा ने कश्मीर का प्रबंध सही ढंग से चलाने के लिए सरदार हरी सिंघ को २४ अगस्त, १८२० ई. को कश्मीर का गवर्नर नियुक्त किया, क्योंकि महाराजा जानता था कि कश्मीर के बिगड़े हालात पर सरदार हरी सिंघ के अलावा काबू पाना मुश्किल है। मौलवी मुहम्मद दीन इस सम्बंध में लिखता है–– ''कश्मीर के अफसोसजनक हालात से आगाह होकर महाराजा ने दीवान मोती

राम को वहां से बुलावा भेजा और कश्मीर की निज़ामत पर सरदार हरी सिंघ नलवा को नामज़द किया।'' सरदार हरी सिंघ ने कश्मीर में अमन बहाल किया और कई ऐतिहासिक फ़ैसले भी किये, जिससे कश्मीर फिर से ख़ुशहाल हो गया। गवर्नरी के दौरान कारीगरों को खजाने में से पैसे देकर दस्तकारी का काम, जो तकरीबन बंद हो चुका था, फिर से शुरू करवाया। शाल, दुशाले, पश्मीने और रेशम का व्यापार शुरू हो गया। केसर की फ़सल, जो नाममात्र रह गई थी, उसका आरंभ करवाया। किसानों को बुला कर उनकी मुश्किलें हल कीं।

महाराजा के परामर्श से १ दिसंबर, १८२१ ई. को सरदार हरी सिंघ ६५०० फ़ौज लेकर मुंघेर का किला फतह करने के लिए चल पड़ा। तीन दिनों में सात किले जीत लिए गए। अंततः २१ दिसंबर को मुंघेर के प्रमुख किले पर फतह पाई। मुंघेर की फतह के जश्न के दौरान ही हज़ारे में बग़ावत हो गई। बग़ावत को दबाने में स. अमर सिंघ मजीठिया शहीद हो गया, जिसका महाराजा को बहुत दुख हुआ, क्योंकि महाराजा स. अमर सिंघ को दिल से चाहता था।

हज़ारा की बग़ावत को दबाने के लिए महाराजा ने हर पक्ष से सोच-विचार कर सभी नामी सरदारों में से सरदार हरी सिंघ को योग्य समझते हुए हज़ारा का गवर्नर नियुक्त कर बहुत इज्जत और सम्मान के साथ हज़ारा की तरफ विदा किया। सरदार हरी सिंघ ने अपनी अक्लमंदी के साथ हज़ारा में अमन बहाल किया। अपने नाम पर एक शहर बसाया, जिसका नाम हरीपुर रखा। वहाँ और किले तथा धार्मिक यादगारों का निर्माण भी करवाया।

महाराजा ने अपने दरबारियों के साथ विचार-विमर्श कर फ़ैसला किया कि अटक से पार पेशावर और जलालाबाद के इलाकों को खालसा राज में शामिल किया जाये। सरदार हरी सिंघ को फ़ौज का कमांडर-इन-चीफ़ नियुक्त कर पेशावर की तरफ कूच करने के लिए भेजा। २० अप्रैल, १८३४ ई. को सरदार हरी सिंघ, हज़ारा का प्रबंध अपने पालित पुत्र स. महां सिंघ मीरपुरिए को सौंप कर कुँवर नौनिहाल सिंघ की फ़ौज सहित अटक पहुँच गया। खालसा फ़ौज मंजिलें तय करती हुई चमकनी पहुँची, तो पता चला कि सुलतान मुहम्मद ख़ान और यार मुहम्मद ख़ान भी खालसा फ़ौज के मुकाबले के लिए मोर्चा लगाए तैयार बैठे हैं। खालसा फौज चमकनी से थोड़ा आगे पहुंची थी कि पेशावर के यार मुहम्मद ख़ान और सुलतान मुहम्मद ख़ान ने खालसा फौज पर हमला कर दिया। घमासान युद्ध हुआ, परन्तु विजय ख़ालसे की हुई। ७ मई, १८३४ ई. को सरदार नलूआ ने पेशावर को खालसा राज में शामिल कर शहर में किले मज़बूत करने का हुक्म दिया। महाराजा रणजीत सिंघ विजय की ख़ुशी में पेशावर पहुँचे और सरदार नलूआ को बधाई दी। पेशावर में सरदार हरी सिंघ ने पक्के किले और छावनियां बनाने का हुक्म दिया। पेशावर के हिंदुओं पर से जज़िया कर हटाया, ज़मींदारों की सुविधाओं के लिए नहरें खुदवाईं तथा कई कुँए

खुदवाए। महाराजा आपके प्रबंध से बड़े खुश हुए और सरदार हरी सिंघ को अपने नाम पर सिक्का चलाने का फरमान जारी किया।

सरदार हरी सिंघ ने 'जमरौद' नाम पर एक किला बनाने का फ़ैसला किया। इस किले के निर्माण के बाद और छोटे किले-- बुर्ज हरी सिंघ, किला बाड़ा, किला मिचनी तथा कई अन्य किले बनवाए। इन किलों का निर्माण करने की योजना को अफगानी हुकूमत अच्छी तरह से समझ गई कि सरदार हरी सिंघ जलालाबाद और काबुल को खालसा राज में मिलाना चाहता है। दोस्त मुहम्मद ख़ान ने सूझबूझ से काम लेते हुए जेहाद का एलान कर दिया और वह १५ अप्रैल, १८३७ ई. को ख़ालसे पर चढ़ाई करने के लिए चल पड़ा। सरदार हरी सिंघ किलों की तैयारी में रात-दिन की मेहनत और थकान के कारण बीमार हो गया, जिस कारण उसको हकीमों ने आराम करने के लिए कहा था। दूसरा यह कि शहज़ादा कुँवर नौनिहाल सिंघ की शादी के समय पेशावर की फ़ौज का ज़्यादा हिस्सा महाराजा ने बुला लिया था, क्योंकि अंग्रेज़ों की तरफ से सर हेनरी फैन कमांडर-इन-चीफ़ तथा अन्य राजा-महाराजा एवं नवाब पहुँचे हुए थे। महाराजा चाहते थे कि खालसा फ़ौज की पूरी तरह से नुमायश की जाए। जंग की तैयारियों के संबंध में रिपोर्ट महाराजा को २६ अप्रैल तक पहुँचा दी गई। कहा जाता है कि धिआन सिंघ ने यह रिपोर्ट शेर-ए-पंजाब को नहीं दी, जिस कारण ३० अप्रैल तक लाहौर से कोई उत्तर नहीं मिला।

अफगान २७ अप्रैल को लंडीखाने से कूच कर दर्रा ख़ैबर के पूरबी छोर पर पहुँच गए। अफगानों की फ़ौज ३० हज़ार थी और खालसा फ़ौज सरदार महां सिंघ के नेतृत्व में केवल एक हज़ार थी। जब अफगानों को पता चला कि सरदार हरी सिंघ किले में मौजूद नहीं, तो उन्होंने तोपों के मुँह किला जमरौद की तरफ सीधे कर दिए। दिन भर तोपों और बंदूकों द्वारा मुकाबला होता रहा। अगले दिन अफगानों ने पानी के स्रोत पर कब्ज़ा कर लिया और किले की बाहरी भुजा भी तोपों द्वारा गिराने में कामयाब हो गए, लेकिन किले में घुसने की हिम्मत न जुटा सके, क्योंकि वे सोचते थे कि पानी पर कब्ज़ा होने के कारण खालसा फौज प्यास से व्याकुल होकर हथियार डाल देगी। २९ अप्रैल का दिन बीत गया। सरदार महां सिंघ ने अपने सिंघों को इकट्ठा कर मशविरा दिया कि दीवार की दरार को भर दिया जाये। कुछ बहादुर सिंघों ने पहर रात रहते तक दीवार को मज़बूत बना दिया और सरदार हरी सिंघ को संदेश पहुँचाने का काम बीबी हरशरन कौर ने पूरा किया। यह ख़त ३० अप्रैल, १८३७ ई. को प्रातः काल दो बजे तक पहुँचा दिया गया।

सरदार हरी सिंघ ने अपनी बीमारी की परवाह न करते हुए पेशावर की मौजूदा दस हज़ार फ़ौज, छः हज़ार पैदल, एक हज़ार कवायददान सवार, १८ तोपों और तीन हज़ार घुड़सवारों सहित जमरौद की तरफ कूच कर दिया। अपने आखिरी ख़त में महाराजा को जमरौद की नाजुक हालत का वर्णन लिख कर कर भेजा और अब तक

लाहौर से फ़ौज न पहुँचने पर हैरानगी प्रकट की तथा फ़ौज भेजने की पुन: माँग की।

सरदार हरी सिंघ प्रभात समय ही जमरौद जा पहुँचे और अपनी फ़ौज सहित अफगानों पर शेर की भांति टूट पड़े। अपने सरदार को देख कर खालसा फ़ौज के हौसले बुलंद हो गए। दूसरी तरफ़ से भी गोलाबारी शुरू हो गई। सरदार ने अपनी फ़ौज को प्रोत्साहन दिया और ललकारते हुए आगे बढ़ने का हुक्म दिया। हमला इतने जोश के साथ किया कि शत्रु की फ़ौज ऐसे उखड़ी जैसे बाढ़ में तिनके बह जाते हैं। शत्रु-दल में भगदड़ मच गई। जब पता चला कि सरदार हरी सिंघ स्वयं लड़ रहा है, तो अफगानी फ़ौज पैर सिर पर रख कर अपनी जान बचाती हुई भाग निकली। सरदार हरी सिंघ ने अफगानों की १४ बड़ी तोपों पर कब्ज़ा कर लिया। अफगान दर्रा ख़ैबर में घुस गए। सरदार अफगानों के पीछे जाना नहीं चाहते थे, मगर सरदार निधान सिंघ १५०० सिपाहियों सहित अफगानों की बड़ी फ़ौज के पीछे जा रहा था। सरदार नलूआ यह देख कर उसकी सहायता के लिए दर्रे के अंदर चला गया। सरदार हरी सिंघ उस जगह पर था जिसे 'सरकमर' (रेतीली चट्टान) कहते हैं। इस चट्टान की गुफा में कुछ शत्रु छिपे बैठे थे। जब सरदार हरी सिंघ आगे बढ़ा तो अंदर बैठे शत्रु ने दो गोलियाँ चलाईं। एक सरदार हरी सिंघ की छाती में और दूसरी पेट में लगी। सरदार के साथ वाले सवारों ने उस हमलावर को बाहर निकाल कर टुकड़े-टुकड़े कर दिया।

घायल सरदार ने घोड़ा जमरौद के किले की तरफ मोड़ लिया और किसी को भी पता न चलने दिया कि सरदार घायल है। इस समय के बारे में कवि कादरयार लिखता है :

नट्ठ निकल चल घोड़िआ, किले दे वल्ल,
असीं पावणा नहीं दूजी वार फेरा!
गोली लग्गी ए कहर कलोर वाली,
घायल होइआ ए अज्ज सवार तेरा!
कादरयार जे लै चलें अज्ज डेरे,
तेरा कदी न भुलसी प्यार शेरा!

सरदार हरी सिंघ को सरदार महां सिंघ ने दो अन्य सिंघों की सहायता से घोड़े पर से उतारा और उसी वक्त वैद्य को बुला कर पट्टी बाँध ली। दर्द तेज़ हो रहा था। सरदार ने अपना अंतिम समय निकट आता हुआ देख कर सरदार महां सिंघ तथा रेजिमेंटों के प्रमुख सरदारों को बुला कर कहा कि "पूरी फ़ौज सरदार की पूरी वफ़ादार तथा नमक-हलाल बन कर रहे और मेरे देहांत की ख़बर लाहौर से मदद आने तक गुप्त रखी जाए।" यह कह कर खालसा राज का एक बहादुर योद्धा, जरनैल इस जहान से कूच कर गया।

सहायक पुस्तकें :

१. बाबा प्रेम सिंघ होती, जीवन-वृतांत स. हरी सिंघ नलूआ, लाहौर बुक शॉप, लुधियाना।
२. बाबा प्रेम सिंघ होती, महाराजा रणजीत सिंघ : जीवन-वृतांत, वज़ीर हिंद प्रेस, श्री अमृतसर साहिब।
३. स. शमशेर सिंघ अशोक, वीर नायक सरदार हरी सिंघ नलवा, पब्लिकेशन ब्यूरो, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला।
४. अनीता सुरिंदर, खालसा राज दी नींह : सरदार हरी सिंघ नलवा।

गुरुद्वारा श्री पाउंटा साहिब का शहीदी साका

*– स. रणधीर सिंघ संभल**

गौरवमई तवारीख के पन्ने बताते हैं कि सचखंड श्री हरिमंदर साहिब तथा अन्य बहुत-से गुरु-स्थानों पर लंबा समय पिता-पुरखी महंत ही काबिज़ रहे, इसलिए ये प्रबंध चलाने में मनमानियां व गुरमति विरोधी कार्यवाहियां करने लगे। १५ नवंबर, १९२० ई. को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर साहिब अस्तित्व में आई। गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर का जन्म हुआ। इससे पहले १५ नवंबर, १८४९ ई. को पंजाब पर अंग्रेज़ों का कब्ज़ा हो चुका था। अंग्रेज़ सरकार यह कभी नहीं चाहती थी कि सिक्ख कौम के पवित्र ऐतिहासिक गुरुद्वारा साहिबान का प्रबंध-सुधार किया जाये और प्रबंध सिक्ख कौम के हाथों में चला जाए। सिंघ सभा लहर के स्थापित होने से सिक्खों ने धर्म प्रचार, स्कूलों और सिक्ख सभ्याचार को संभालने की तरफ अधिक ध्यान दिया। इस समय में काबिज़ महंत पुजारी और सरबराह दिन-प्रति-दिन चरित्रहीन बनते जा रहे थे। ऐसे चरित्रहीन महंतों के विरुद्ध सिक्ख संगत में आक्रोश की लहर उठ खड़ी हुई। सबसे पहले गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब को काबिज़ महंतशाही से आज़ाद करवाने के लिए फरवरी, १९२१ ई. में १५० सिंघ-सिंघणिआं शहीद हुए। इस प्रकार सिक्ख कौम ने महान शहादतें देकर गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब, गुरुद्वाराश्री तरनतारन साहिब, गुरुद्वारा श्री बेर साहिब, गुरुद्वारा गुरु का बाग़ आदि पवित्र ऐतिहासिक स्थान महंतों की जकड़ से आज़ाद करवा लिए।

ऐतिहासिक स्रोतों के अनुसार सिक्ख कौम का पूजनीय ऐतिहासिक स्थान गुरुद्वारा श्री पाउंटा साहिब पंजाब राज्य से बाहर था। इस पवित्र स्थान की तरफ मिसल शहीदां तरना दल हरिआं वेलां शिरोमणि पंथक जत्थेबंदी ने गुरुद्वारा साहिब की सेवा और प्रबंध की तरफ ध्यान दिया। ऐतिहासिक स्रोतों और हवालों के अनुसार दशम पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी नाहन रियासत के राजा मेदनी प्रकाश की विनती स्वीकार कर ५०० योद्धा सिक्खों और परिवार सहित १४ अप्रैल, १६८५ ई. को श्री अनंदपुर साहिब से नाहन पहुँचे। राजा मेदनी प्रकाश और संगत की विनती स्वीकार कर यमुना के किनारे नाहन से २५ किलोमीटर की दूरी पर मार्गशीर्ष की संक्रांति वाले दिन संवत् १७४२ बिक्रमी मुताबिक १५ नवंबर, १६८५ ई. को श्री पाउंटा साहिब की बुनियाद श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की आज्ञा से बाबा बुड्ढा जी के वंश के नायक भाई गुरबखश सिंघ जी ने रखी और इससे पूर्व अरदास भाई नंद चंद संघा ने की। श्री गुरु गोबिंद सिंघ ने ५२ कवि अपने पास रखे। कवि दरबार सजाते रहे। पीर बुद्धू शाह को ब्रह्म-ज्ञान देकर उसके पुत्रों और भाइयों की कुर्बानी से प्रसन्न होकर अशीर्वाद दिया। इस पवित्र स्थान पर साहिबज़ादा बाबा अजीत सिंघ

**माता खीवी जी सिक्ख सेवा सोसायटी, २५, फोस-२, बदरी कालोनी, बस्ती दानिशमंदां (डेरा संतगढ़), कपूरथला रोड, जलंधर फोन : ७६५२८-०९११०*

जी का जन्म माता सुंदर कौर जी की कोख से ७ जनवरी, १६८७ ई. को हुआ। यहीं पर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने निवास कर १८ सितंबर, १६८८ ई. को भंगाणी का युद्ध जीता। सतिगुरु जी ने इस पवित्र स्थान पर जापु साहिब बाणी उच्चारण की। कलगीधर पिता जी श्री पाउंटा साहिब से २७ अक्तूबर, १६८८ ई. को श्री अनंदपुर साहिब पहुँच गए। इस स्थान की सेवा और सारा प्रबंध साथ आए भाई बिशन सिंघ को संभाल गए। इनके अकाल प्रस्थान के पश्चात् फिर इनकी संतान ही गुरुद्वारा श्री पाउंटा साहिब की सेवा करती रही।

बुड्ढा दल के जत्थेदार बाबा चेत सिंघ ने दिवंगत जत्थेदार बाबा हरभजन सिंघ हरिआं वेलां वालों को फरवरी, १९६४ ई. में गुरुद्वारा श्री पाउंटा साहिब की मान-मर्यादा को बरकरार रखने व प्रबंध को सही ढंग से चलाने के लिए दल सहित जाने की आज्ञा दे दी। बाबा हरभजन सिंघ दल सहित श्री अनंदपुर साहिब के निकट सुशोभित गुरुद्वारा श्री अजीतगढ़ साहिब में होला-मोहल्ला मना कर अनेक कठिनाइयों और बाधाओं के होते हुए १० मार्च, १९६४ ई. को श्री पाउंटा साहिब पहुँचे। यहाँ की पवित्रता बहाल करने के लिए संत बाबा निहाल सिंघ और दल के निहंग सिंघों के साथ बाबा हरभजन सिंघ ने गुरमता पारित कर संगत के सहयोग से ६ अप्रैल, १९६४ ई. को श्री अखंड पाठ साहिब की शृंखला आरंभ करवा दी। इधर चालाक-चतुर महंत को दल की आमद के बारे में सब कुछ पता चल गया था, जिस कारण सरकारे-दरबारे पहुंच कर इस महंत ने पूरा प्रबंध कर रखा था। महंत ने आस-पास गाँवों के कुछ बदमाश लोग भी बुला लिए थे। शहीदी साके वाले दिन २२ श्री अखंड पाठ साहिब के भोग पड़ चुके थे। २३वां श्री अखंड पाठ साहिब जारी था। संत बाबा निहाल सिंघ गुरु-घर में चँवर की सेवा निभा रहे थे। दरबार में उस समय लगभग १५ सिंघ उपस्थित थे। सिंघ साहिब बाबा हरभजन सिंघ को रैस्ट हाऊस में बातचीत करने के बहाने बुला कर उन्हें गिरफ़्तार कर लिया गया। इधर हिमाचल की पुलिस ने गुरुद्वारा साहिब को चारों तरफ़ से घेर लिया। उस समय साढ़े १२ बजे का समय था। डी. सी. मिस्टर आर. के. चंडेल ने पुलिस को गोली चलाने का हुक्म दे दिया। अंधाधुन्ध गोलियों की बौछार से मौके पर ही ११ निहंग सिंघ शहीद हो गए और श्री अखंड पाठ साहिब में बाधा उत्पन्न हो गई। जत्थेदार बाबा निहाल सिंघ अन्य तीन निहंग सिंघों सहित गोलियाँ लगने के कारण गंभीर रूप से घायल हो गए। उस दिन २२ मई, १९६४ ई. दिन मंगलवार था। गुरुद्वारा श्री पाउंटा साहिब के ख़ूनी साके की ख़बर जंगल की आग की तरह फैल गई। इस प्रकार पंथक जत्थेबंदी मिसल शहीदां तरना दल हरिआं वेलां के ग्यारह निहंग सिंघों ने शहादत देकर पतित महंत की जकड़ में से पवित्र स्थान गुरुद्वारा श्री पाउंटा साहिब को आज़ाद करवा कर, इसका प्रबंध पंथ के हवाले कर दिया। प्रत्येक वर्ष श्री पाउंटा साहिब के शहीदों की पवित्र वर्षगांठ २० मई को पंथक जत्थेबंदी के स्थान गुरुद्वारा श्री गुप्तसर साहिब और २२ मई को गुरुद्वारा श्री पाउंटा साहिब में ज़िंदा शहीद सिंघ साहिब जत्थेदार बाबा निहाल सिंघ हरिआं वेलां वालों के नेतृत्व में अति श्रद्धा व सम्मान सहित गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी तथा संगत के सहयोग से मनायी जाती है।

नशा-मुक्ति : सद्‌गुण-युक्ति

-डॉ. मनजीत कौर*

ए रसना तू अन रसि राचि रही
तेरी पिआस न जाइ ।।
पिआस न जाइ होरतु कितै
जिचरु हरि रसु पलै न पाइ ।।
हरि रसु पाइ पलै पीऐ हरि रसु
बहुड़ि न त्रिसना लागै आइ ।।
एहु हरि रसु करमी पाईऐ
सतिगुरु मिलै जिसु आइ ।। *(पन्ना ९२१)*

तीसरे पातशाह श्री गुरु अमरदास जी की पावन बाणी 'अनंदु साहिब' में मानव शरीर के विविध अंगों के परम उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए हिदायत की गई है। उपरोक्त पउड़ी में रसना अर्थात् जिह्वा (जीभ) की उपयोगिता दर्शाते हुए गुरु जी स्पष्ट करते हैं कि हे मेरी रसना! तू संसार के अन्य रसों में लीन है, इसलिए तेरी प्यास समाप्त नहीं होती अर्थात् तू तृप्त नहीं होती। तेरी प्यास अन्य किसी वस्तु से नहीं जाएगी, जब तक तू हरि-रस को अपने अन्तःकरण में नहीं बसा लेती। हरि-रस को अपने अंदर बसा कर अगर तू मनःतृप्ति हासिल करेगी तो तेरी कोई अन्य तृष्णा शेष नहीं रह जाएगी। यह हरि-रस अच्छे कर्मों से मिलता है। अच्छा भाग्य उन्हीं का बनता है जिन्हें सच्चा गुरु मिलता है। अन्तिम पंक्ति में गुरु जी स्पष्ट करते हैं कि जब हृदय-घर में प्रभु प्रकट होता है तो अन्य सभी रस विस्मृत हो जाते हैं अर्थात् सांसारिक रस भूल जाते हैं :

कहै नानकु होरि अन रस सभि वीसरे
जा हरि वसै मनि आइ ।। *(पन्ना ९२१)*

संसार में दो तरह के रस हैं-- एक वे जिन्हें अपना कर लोक-परलोक सफल बनाया जाता है। दूसरे वे, जिन्हें अपनाना जीवन को नरक बना लेना है, तन-मन से रोगग्रस्त होकर समाज के लिए ही बोझ बन जाना है। असल में वह रस, रस ही नहीं माना जा सकता जो जीवन के लिए घातक सिद्ध हो। समस्त संतों-महापुरुषों ने बेशकीमती मानव देह को नशा-मुक्त रखने का संदेश दिया है, क्योंकि नशा मनुष्य के तन-मन-धन, मान-सम्मान की बर्बादी का कारण बनता है। यह मनुष्य का सुख-चैन सब कुछ छीन लेता है तथा परिवारों के परिवार नष्ट कर देता है, इंसान का दीन-ईमान ही खत्म कर देता है।

श्री गुरु नानक देव जी से लेकर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी तक सभी गुरु साहिबान ने नशा-मुक्त समाज की परिकल्पना की और

*२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९९२९७-६२५२३

जन-जन को समझाया कि घातक नशों को छोड़कर प्रभु-नाम का नशा करो तथा मानवता की सेवा करो।

'सादा जीवन, उच्च विचार,' यही जीवन का आदर्श होना चाहिए। आठवें गुरु श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब ने हिदायत की है कि 'कुड़ी-मार' अर्थात् कन्या-वध करने वाले तथा 'नड़ी-मार' अर्थात् तम्बाकू का सेवन करने वालों के साथ 'रोटी' और 'बेटी' का संबंध नहीं रखना! श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने अपनी धर्म प्रचार-यात्राओं के दौरान लोगों को नशा छोड़ने के लिए प्रेरित किया। यहीं नहीं, उन्होंने मोह-माया और अहंकार आदि को भी नशे की तरह घातक मानते हुए उससे बचने हेतु उपदेश दिए। उनकी बाणी में बहुत सारे उदाहरण इस के मिलते हैं :

जो प्रानी ममता तजै लोभ मोह अहंकार ।।
कहु नानक आपन तरै
अउरन लेत उधार ।। (पन्ना १४२७)

गुरु जी के चिन्तनानुसार जिसने लोभ, मोह, अहंकार को त्याग दिया वह स्वयं तो भवसागर से पार उतरता ही है, साथ-साथ ईश्वर में आस्था रखने वाले लोगों को भी विकारों से बचा लेता है।

इसी प्रकार से थानेसर शहर पहुंच कर नवम गुरु जी ने तम्बाकू को हाथ न लगाने, तथा न पीने का आदेश दिया। साथ ही यह फरमान किया कि समस्त बरकतें, रहमतें उसके पास ही आयेंगी जो तम्बाकू का सेवन नहीं करेगा।

गुरबाणी में भी समझाया गया है कि जिस वस्तु को पीने से प्रभु भूल जाए और प्रभु के दरबार में दंड मिले, ऐसी वस्तु का भूल कर भी सेवन नहीं करना चाहिए। इस संदर्भ में गुरबाणी में अंकित है :

जितु पीतै खसमु विसरै दरगह मिलै सजाइ ।।
झूठा मदु मूलि न पीचई जे का पारि वसाइ ।।

(पन्ना ५५४)

इंसान को किस प्रकार का नशा करना चाहिए, गुरबाणी में उस सम्बंध में फरमान है कि हे इंसान! तू ज्ञान को गुड़ बना और ध्यान को महूए के फूल बना। अच्छे आचरण रूपी छाल को तू उसमें मिला। प्रभु-विश्वास को भट्ठी बना और प्रेम का लेप तैयार कर। इस प्रकार अमृत को एकत्र किया जाता है। इस प्रकार का नशा आनंद देने वाला है :

गुड़ु करि गिआनु धिआनु करि धावै
करि करणी कसु पाईऐ ।।
भाठी भवनु प्रेम का पोचा
इतु रसि अमिउ चुआईऐ ।।

(पन्ना ३६०)

गुरबाणी में फरमान है कि मद्य (शराब) को पीने से बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है और व्यक्ति के प्रत्येक कार्य में पागलपन आ जाता है अर्थात् इंसान झूठा नशा कर विनाश का कारण बन जाता है :

जितु पीतै मति दूरि होइ बरलु पवै विचि आइ ।।

आपणा पराइआ न पछाणई खसमहु धके खाइ।।
(पन्ना ५५४)

गुरु साहिबान के निर्मल उपदेशों के माध्यम से समूची मानवता को यही पावन संदेश है कि मनुष्य (शराब जैसे) नशों को नहीं स्वीकार कर सकता :

अंम्रित का वापारी होवै
किआ मदि छूछै भाउ धरे।।२।।
गुर की साखी अंम्रित बाणी
पीवत ही परवाणु भइआ।। (पन्ना ३६०)

वैसे तो प्रत्येक प्रकार का नशा घातक है, लेकिन कुछ नशे तुरंत प्रभाव डालते हैं और कुछ का प्रभाव निश्चित समय के पश्चात पड़ता है, जो धीरे-धीरे अंदर ही अंदर शरीर को खोखला करते हैं। यही नहीं, जब तक इन नशों के घातक प्रभाव सामने आते हैं तब तक ये अत्यन्त भयानक रूप ले चुके होते हैं। उपचार भी बहुत महंगा होने के कारण सबके वश की बात नहीं रहती। अन्ततः परिणाम का अनुमान तो सहज ही लगाया जा सकता है।

सिक्ख पंथ की 'रहित मर्यादा' में कुरीतियों, आडंबरों, कर्मकाण्डों के साथ-साथ नशों को त्यागने की प्रेरणा भी दी गई है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने १६९९ ई. की बैसाखी के दिन अमृत-पान करवा कर अनमोल दात प्रदान की और खालसा पंथ की सर्जना की। अमृत-पान के पश्चात् गुरु जी ने चार कुरहितों को वज्र कुरहित मानते हुए उनसे सदैव दूर रहने का आदेश दिया, जिनमें तंबाकू का सेवन निषेध करार दिया गया। तंबाकू के सेवन के विरोध में जनचेतना तीव्र गति से प्रचलित हुई।

गुरु साहिबान मानव-मात्र को नशा आदि से बचने का आदेश देकर विश्व-कल्याण हेतु महान परोपकार कर गए। इस पर अमल न करने वाले अपना, अपने परिवार का, अपने समाज का, अपने राष्ट्र का कितना अहित करते हैं उससे हम भली-भांति अवगत हैं। इसके विपरीत गुरु साहिबान की आज्ञा में चलने वाले अंदर-बाहर से निर्मल रहते हैं। उन्हें बस, लत है तो सेवा और सिमरन की। वे केवल अपना ही भला नहीं करते, अपितु एक स्वच्छ समाज, सभ्य राष्ट्र का निर्माण कर विश्व-हित में भी अपना योगदान दे जाते हैं। हमें भी गुरबाणी आशयानुसार अर्थात् गुरु-दर्शाये मार्ग पर चलकर अपना बेशकीमती दुर्लभ मानव जीवन सार्थक करना चाहिए। नशों से हमेशा दूर रहते हुए दूसरों के लिए भी प्रेरणा-स्रोत बनना चाहिए। अन्त में यही अपील करते हुए अपने मनोभाव व्यक्त करना चाहूंगी :

नशा करना ही है अगर तो,
कीजिए प्रभु-नाम का!
दया, करुणा, प्रेम,
परोपकार आदि नेक काम का!

ख़बरनामा

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का १२६० करोड़ ९७ लाख रुपए का बजट पास

श्री अमृतसर साहिब : २९ मार्च : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के जनरल इजलास के दौरान वर्ष २०२४-२५ के लिए १२६० करोड़ ९७ लाख ३८ हज़ार रुपए का बजट पास किया गया। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के मुख्यालय में स्थित सरदार तेजा सिंघ समुंदरी हाल में श्री गुरु ग्रंथ साहिब की हजूरी में हुए इजलास में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के महासचिव भाई रजिंदर सिंघ महिता ने बजट पेश किया, जिसे उपस्थित सदस्यों ने जयकारों की गूँज में स्वीकृति प्रदान की। इस अवसर पर श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार ज्ञानी रघबीर सिंघ, तख़्त श्री केसगढ़ साहिब के जत्थेदार ज्ञानी सुलतान सिंघ, तख़्त श्री दमदमा साहिब के जत्थेदार ज्ञानी हरप्रीत सिंघ और शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी सहित शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सदस्य उपस्थित थे। बजट पेश करते हुए महासचिव भाई रजिंदर सिंघ महिता ने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के विभिन्न विभागों व अदारों से होने वाली आमदन और खर्चों के विवरण साझा करते हुए भविष्य में प्राथमिकता के आधार पर किये जाने वाले कार्यों के लिए सुरक्षित की गई राशि के बारे में आंकड़े पेश किये।

बजट इजलास के बाद पत्रकारों के साथ बात करते हुए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने महासचिव भाई रजिंदर सिंघ महिता द्वारा पेश किये गए बजट को संतुलित बजट करार दिया। उन्होंने बताया कि इस बार पिछले बजट की अपेक्षा १४ प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने कहा कि विशेष तौर पर अगले वित्तीय वर्ष के दौरान धर्म प्रचार, विद्या और पंथक कार्यों को प्राथमिकता दी जायेगी। उन्होंने बताया कि इस बार धर्म प्रचार कमेटी का बजट १०० करोड़ रुपए का है। धर्म प्रचार कमेटी के माध्यम से किये जाने वाले कार्यों के लिए रखी राशि की तफ़सील देते हुए एडवोकेट धामी ने बताया कि विशेष तौर पर श्री गुरु अमरदास जी का सितंबर माह में ४५० वर्षीय ज्योति-जोत दिवस मनाने के लिए ३ करोड़ रुपए आरक्षित किये गए हैं। इसके साथ ही धर्म प्रचार कमेटी के माध्यम से सिक्ख नौजवानों को प्रशासकीय सेवाओं के लिए तैयार करने के लिए २ करोड़ रुपए, अमृतधारी बच्चियों को निः शुल्क शिक्षा देने के लिए २ करोड़ रुपए, अमृतधारी विद्यार्थियों की फ़ीस के लिए २ करोड़ ५० लाख रुपए, अमृत संचार समागमों के लिए १ करोड़ ८० लाख रुपए, धार्मिक साहित्य, पुस्तकालय, शस्त्र-विद्या, ऐतिहासिक यादगारी प्रोजेक्टों और संगत को वीडियो वैन के जरिए धार्मिक फिल्में दिखाने के लिए ४ करोड़ ४५ लाख रुपए, धर्म प्रचार लहर को और प्रचंड करने के लिए १ करोड़ १५ लाख रुपए, बच्चों को धार्मिक परीक्षा के जरिए गुरमति के साथ जोड़ने के लिए १ करोड़ ६० लाख रुपए तथा पंजाब से बाहर के

सिक्ख मिशनों के लिए ९ करोड़ रुपए की राशि रखी गई है। इसी प्रकार धर्म प्रचार कमेटी के अन्य कार्यों के लिए भी बजट में विशेष रूप से प्रबंध किया गया है।

एडवोकेट धामी ने बताया कि इस बार गुरुद्वारा साहिबान का बजट ९९४ करोड़ ५१ लाख रुपए है। इसी प्रकार शैक्षिक अदारों का बजट २५१ करोड़ रुपए, प्रिंटिंग प्रेसों का बजट ७ करोड़ ९४ लाख रुपए पास किया गया है। उन्होंने विशेष रूप से ज़िक्र किया कि इस बार के बजट में शैक्षिक अदारों के स्टाफ की बकाया तनख्वाह के लिए विशेष प्रबंध किया गया है। उन्होंने कहा कि ३१ मार्च, २०२४ ई. तक की सभी बकाया तनख्वाह की अदायगी के लिए विशेष रूप से प्रबंध किया गया है। इस कार्य के लिए विशेषतया जनरल बोर्ड फंड में से १० करोड़ रुपए की विशेष राशि विद्या फंड के लिए आरक्षित की गई है।

उन्होंने बताया कि जनरल बोर्ड फंड, ट्रस्ट फंड, विद्या फंड, स्पोर्ट्स फंड आदि की अपनी आमदन चाहे कम है, परन्तु इनके लिए गुरुद्वारा साहिबान से दसवंध (दशमांश) तथा अन्य आवश्यक फंड लिए जाते हैं। इन सभी फंडों के जरिए किये जाने वाले कार्य बेहद अहम होते हैं। उन्होंने बताया कि इस बार इन फंडों के माध्यम से पंथक कार्यों के लिए विशेष राशि रखी गई है, जिनमें बंदी सिंघों के केसों की पैरवी के लिए ६० लाख रुपए, बंदी सिंघों के मासिक सम्मान-भत्ते के लिए ४० लाख रुपए, धार्मिक फौजियों के लिए ४० लाख रुपए, सिकलीगर और बनजारे सिक्खों के लिए ६० लाख रुपए, गरीब विद्यार्थियों के लिए ५० लाख रुपए, प्राकृतिक आपदा के लिए १ करोड़ ४८ लाख रुपए, खेल के लिए ३ करोड़ ६ लाख रुपए का प्रबंध किया गया है।

एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने बताया कि सिक्ख इतिहास रिसर्च बोर्ड के माध्यम से खोज-कार्यों के लिए भी विशेष रूप से राशि रखी गई है। इसके अलावा बाबा बुड्ढा जी चेरिटेबल अस्पताल बीड़ साहिब के लिए १ करोड़ ५ लाख रुपए का प्रबंध किया गया है। उन्होंने विशेष तौर पर यह भी ज़िक्र किया कि हरियाणा स्थित शाहबाद मारकंडा में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा स्थापित किये गए मीरी पीरी मेडिकल कॉलेज के लिए भी ८ करोड़ रुपए रखे गए हैं। उन्होंने बताया कि चाहे इस मेडिकल कॉलेज को मुकम्मल रूप से शुरू करने में मुश्किलें पेश आ रही हैं, परंतु आशा है कि यह अगले वर्ष से बाकायदा शुरू किया जा सकेगा। उन्होंने बताया कि इस सम्बन्ध में आवश्यक मशीनरी तथा अन्य खर्चों का प्रबंध किया जा रहा है।

एडवोकेट धामी ने कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी और इससे सम्बन्धित अदारों का बजट सामूहिक रूप से संगत द्वारा भेंट की जाती राशि और दसवंध पर ही निर्भर करता है। उन्होंने कहा कि बहुत सीमित साधनों में सिक्ख संस्था द्वारा धर्म प्रचार, विद्या, स्वास्थ्य सेवाओं एवं पंथ भलाई व मानव-कल्याण हेतु कार्य किये जाते हैं। जो कार्य सरकारों द्वारा किये जाने वाले हैं, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी उनमें भी अग्रणी भूमिका निभा रही है। उन्होंने स्पष्ट किया कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का बजट पंजाब सरकार के मुकाबले १ प्रतिशत से कम है, जबकि कुछ लोगों द्वारा जानबूझ

कर यह धारणा फैलाई जाती है कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का बजट पंजाब सरकार से अधिक है। उन्होंने वचनबद्धता प्रकट की कि सिक्ख संस्था संगत के सहयोग से सिक्खी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ राष्ट्रीय मुद्दों पर अपनी गतिशीलता बनाए रखेगी और कौम की चढ़दी कला के लिए किये जाने वाले कार्यों में दो कदम आगे रहेगी।

बजट इजलास के दौरान शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के कार्यकारी सदस्य स. गुरप्रीत सिंघ झब्बर, सदस्य बाबा गुरप्रीत सिंघ रंधावा, स. बलविंदर सिंघ बैंस और स. सुखहरप्रीत सिंघ रोडे ने भी संबोधित किया। इजलास का संचालन शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सचिव स. प्रताप सिंघ ने किया। अरदास सिंघ साहिब ज्ञानी सुलतान सिंघ ने की और पवित्र हुकमनामा जत्थेदार ज्ञानी रघबीर सिंघ ने लिया।

शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के मुख्यालय में झुलाए गए खालसाई निशान

श्री अमृतसर साहिब : १३ अप्रैल : पांच सिंघ साहिबान द्वारा ३२५वें खालसा साजना दिवस के अवसर पर समूची सिक्ख कौम को अपने घर पर खालसाई निशान (झंडा) झुलाने के आदेश के मुताबिक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अधिकारियों और कर्मचारियों द्वारा शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के मुख्यालय में खालसयी निशान झुलाए गए। इससे पूर्व सरदार तेजा सिंघ समुंदरी हाल में कर्मचारियों ने सामूहिक रूप से मूलमंत्र और गुरमंत्र का जाप कर सिक्ख कौम की चढ़दी कला व बंदी सिंघों की रिहाई के लिए अरदास की।

इस अवसर पर बातचीत करते हुए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सचिव स. प्रताप सिंघ ने बताया कि सिंघ साहिबान के प्रत्येक आदेश का सिक्ख कौम के लिए बड़ा महत्व होता है, जिसकी पालना करना कौम की जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा कि जहाँ प्रत्येक घर में सिक्खों ने खालसाई निशान झुला कर ३२५वें खालसा साजना दिवस को ऐतिहासिक बनाना है, वहीं शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के मुख्यालय में कार्मिक परिवार द्वारा कौम की चढ़दी कला का प्रदर्शन किया गया। उन्होंने कहा कि १६९९ ई. की बैसाखी वाले दिन श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने ख़ालसा सृजित कर आत्माभिमान के साथ जीने का मार्ग दिखाया। हम सबका फ़र्ज़ है कि गुरु साहिब द्वारा सृजित ख़ालसे के उद्देश्यानुसार कौम की चढ़दी कला के लिए कार्यशील रहें। इस अवसर पर उन्होंने समूची कौम को खालसा साजना दिवस की बधाई भी दी।

इस अवसर पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान के ओएसडी स. सतबीर सिंघ (धामी), अपर सचिव स. बलविंदर सिंघ काहलवां, स. कुलविंदर सिंघ रमदास, स. गुरिंदर सिंघ मथरेवाल, स. बिजै सिंघ, स. प्रीतपाल सिंघ, उप सचिव स. शाहबाज सिंघ, स. जसविंदर सिंघ जस्सी, स. बलविंदर सिंघ खैराबाद, स. गुरनाम सिंघ, स. हरभजन सिंघ वक्ता, स. सुखबीर सिंघ, अधीक्षक स. निशान सिंघ और समूह कर्मचारीगण उपस्थित थे।

सरदार हरी सिंघ नलूआ

Registered with RNI at No. PUNHIN/2007/21665
Postal Registration No. L-1/PB-ASR/008/2023-25 Licensed to Post without Pre-Payment No. PB/R-001/2023-25

GURMAT GYAN May 2024

DHARAM PARCHAR COMMITTEE,
Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee, Sri Amritsar Sahib (PUNJAB)

काहनूंवान छंभ में घटित छोटा घल्लूघारा का दृश्य

Owner : Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee. Publisher & Printer : S. Manjit Singh. Printed at Golden Offset Press, Gurdwara Sri Ramsar Sahib, Sri Amritsar Sahib. Published from SGPC office, Teja Singh Samundri Hall, Sri Amritsar Sahib. Editor : Satwinder Singh
Date : 7-5-2024